समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• मार्च २०१२ • वर्ष ६३ • अंक ३

मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

"टूटते परिवार" : सार्थक गोष्ठी

- परिवारों में सहनशीलता एवं सम्मान की कमी : ब्रह्मकुमारी बहन पद्मा
- सबसे पहले मेरा, परिवार बाद में : जुगलकिशोर जैथलिया
- टका धर्म, परिवार में धनी भाई ही सबसे बड़ा भाई : सीताराम शर्मा
- सकारात्मक सोच एवं आपसी प्रेम ही समाधान : हरिप्रसाद कानोड़िया
- सोचने की दिशा में परिवर्तन आवश्यक : सत्यनारायण शर्मा

बायें से दायें - रामअवतार पोद्दार, सत्यनारायण शर्मा(पूर्व शिक्षा मंत्री, छत्तीसगढ़) सीताराम शर्मा, हरि प्रसाद कानोड़िया, ब्रह्मकुमारी बहन पद्मा, जुगलकिशोर जैथलिया एवं आत्माराम सोंथलिया

- ★ हिन्दी भाषी विवेक गुप्त पश्चिम बंगाल से राज्य सभा सदस्य निर्वाचित : सम्मेलन की बधाई
- ★ अखिल भारतीय समिति की बैठक : ८ अप्रैल, हरिद्वार
  आतिथ्य : नवगठित उत्तराखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
- ★ पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन : नयी कार्यकारिणी द्वारा पद भार ग्रहण।

विवेक गुप्त

नववर्ष विक्रम संवत २०६९ के आगमन पर हार्दिक अभिनन्दन

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors

- ***IRON ORE*** *- BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *- BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA

Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442

Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com, GRAM: "RUNGTA"

REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI

KOLKATA 700017, INDIA

Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION

RUNGTA OFFICE

MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA

Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161

Email: rungta_bbl@yahoo.co.in, GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

ORISSA

RUNGTA OFFICE

MAIN ROAD, BARBIL 758035

DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA

Phone: 06767- 27689/277391/021

Fax: 91-6767-277011

JHARKHAND

RUNGTA OFFICE

SADAR BAZAR, CHAIBASA - 833201

DIST- SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA

Phone: 06582-256621/256321

Fax: 91-6582-257521

समाज विकास

◆ मार्च २०१२ ◆ वर्ष ६३ ◆ अंक ३ ◆ एक प्रति - १० रु. ◆ वार्षिक-१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४
सम्पादकीय : बंगाल से राज्यसभा में हिन्दीभाषी – ***सीताराम शर्मा***	५-६
अध्यक्षीय : हमारा गौरव - हमारे युवा.... ***हरि प्रसाद कानोड़िया***	७
समाज को करना होगा आत्मचिंतन – ***संतोष सराफ***	९
टूटते परिवार : गोष्ठी	११-१२
दूरदर्शन पर परिचर्चा – पश्चिम बंगाल में शिल्प : हाल और हकीकत	१३-१४
कविता - व्यक्ति के भीतर दबा सरकारी तंत्र - ***शिव सारदा***	१४
खेली फूलों की होली	१५
भ्रूण हत्या के प्रतिवाद में संकल्प	१७
अखिल भारतीय समिति एवं कार्यकारिणी समिति की बैठक ८ अप्रैल को हरिद्वार में	१७
आनंद और उत्साह से जिएँ बुढ़ापे का जीवन – ***भानीराम सुरेका***	१८-१९
उच्च शिक्षा कोष - आवेदन पत्र आमंत्रित	२०
तनावमुक्ति का साधन है संगीत – ***आचार्य विद्यानंद***	२१-२२
प्रान्तीय समाचार – पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन	२३
सम्मेलन द्वारा विवाह समारोहों में सादगी बरतने की अपील	२३
प्रान्तीय समाचार – छत्तीसगढ़	२४-२५
राजस्थानी कहाणी – आंपा नै मालूम नीं जमानो कित्तो बदलगो – ***नथमल केडिया***	२६
लघुकथाएं – एक साँवली-सुन्दर लड़की/डायनामाइट – ***शिव सारदा***	२७
व्यंग – कुर्सी के लिए कुश्ती – ***रामचरण यादव***	२८-२९
गीत - ग़ज़ल – ***श्यामसुन्दर बगड़िया***	२९
कविता – दूर के राही – ***राम गोपाल सैनी***	३१
वैवाहिक आचार संहिता	३१
पुस्तक समीक्षा – सहज राजस्थानी व्याकरण	३३
मारवाड़ी सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य एवं कार्यक्रम	३४
SMS की दुनिया	३४

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७

फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com

के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

सीडीसी प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित

प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

होली अंक : पठनीय व सरावण जोग

समाज विकास रो फरवरी, २०१२ रो होली अंक पढ़ियो। अंक मोय भांत-भांत री रचनावां चोखी लागी। राष्ट्रभाषा हिन्दी माथै सीख देवतो संपादकीय सूं श्री गणेश हुयो। मातृभाषा राजस्थानी सारू चेतावतां शम्भु चौधरी अर श्याम सुन्दर टावरी रा आलेख घणा आछा लाग्या। आखो मारवाड़ी समाज मातृभाषा राजस्थानी भाषा रो रूखाळो है। कन्हैयालाल सेठिया जी रो नांव राजस्थानी, समाज में आज अजर अमर है। प्रवासी साहित्यकार श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री रतनशाह, श्री नथमल केड़िया, श्री रामनिवास लखोटिया, श्री अम्बू शर्मा, श्री लक्ष्मण नवेटिया (नेपाल) युवा मारवाड़ी सम्मेलन एवं महिला संघ आदि अनेक मायड़ भाषा रा प्रवासी भाईया रो योगदान सदा याद रैवेला।

समाज विकास रै इण अंक मांय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया रो फिजूल खर्ची सूं बचाव अर राष्ट्रीय महामंत्री सन्तोष सराफ रो सुझाव क अपांणी परंपरा अर संस्कृति ने जीवित राखणो जरूरी है, सुप्रियाजी री शाकाहारी भोजन संबंधी अनुभवशील बातां आज रै समय में घणी उपयोगी अर अनुकरणीय है। सारो अंक पढ़णजोग व सरावणजोग है। हाळी री सारा मारवाड़ी भाईयों ने अकादमी परिवार कांनी सूं शुभकामना। संपादक जी व प्रकाशक जी नै घणा घणा रंग।

जैः राजस्थान! जैः राजस्थानी!!

– पृथ्वीराज रतनू

सचिव, राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति-अकादमी, बीकानेर

स्थापना दिवस अंक संग्रहणीय

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७७वें स्थापना दिवस समारोह में मूर्धन्य साहित्यकार बिसाऊ निवासी डॉ. उदयवीर शर्मा को राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किये जाने पर हम पूर्ण कृतज्ञता सहित आभार ज्ञापित करते है। आपके इस सुकृत्य से शेखावाटी भू-भाग से जुड़े सभी साहित्य प्रेमी गोर्वान्वित हुए हैं। इस सुखद अवसर पर सम्मेलन द्वारा समाज विकास का आकर्षक विशेषांक प्रकाशित किया गया है। इस अंक में उच्च कोटि के ज्ञानवर्द्धक लेखों की प्रचुर पठनीय सामग्री होने से यह संग्रहणीय तो है ही प्रशंसनीय भी है।

ढेर सारी बधाई और शुभकामनाएं स्वीकार करें।

– जगदीश चौहान

श्री युवक सभा पुस्तकालय, मण्डावा

वेलेंटाइन डे यानि मातृ-पितृ पूजन दिवस

१४ फरवरी को वेलेंटाइन डे के रूप में भारत छोड़ अन्य देशो में मनाया जाता आ रहा है। पिछले कुछ वर्षों से भारत में भी इलेक्ट्रानिक मीडिया व प्रिन्ट मीडिया द्वारा इस का काफी प्रचार प्रसार हुआ है व हमारी आने वाली जवान पीढ़ी इस और जाती नजर आ रही है। आने वाले कुछ वर्षो में यह हमारे देश के भविष्य कहे जाने वाले बच्चों के खून में घुल जाने वाली है। हालांकि कई संस्था प्रतिवर्ष इसका पूरे जोर शोर से विरोध भी करती है लेकिन इस विषय को जवान पीड़ी समझने को तैयार नहीं हो रही है।

इस विषय को गंभीरता से सोचने पर एक अच्छा विचार मन में आया और बतौर जांच के रूप में इसे १४ फरवरी २०१२ को अजमा कर देखा गया। इस कार्यक्रम को छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह के कानों तक पूज्य बापू आशाराम जी द्वारा पहुचाया गया। इस दिन को मात-पितृ पूजन दिवस के रूप में सभी शिक्षण संस्था, स्कूल-कॉलेज व सेवा संस्थाओं, सामाजिक संस्था व परिवार स्तर पर उत्साह व भावना पूर्वक मनाया जाए ऐसा माननीय मुख्यमंत्री जी ने घोषणा की और इसके काफी अच्छे परिणाम सामने आए।

इस विषय को हमारी संस्था के एजेन्डे में भी शामिल करने पर विचार किया जाए ताकि आने वाले वर्षो में १४ फरवरी को मातृ-पितृ दिवस के रूप में मनाया जाने लगे।

विषय की गंभीरता पाश्चात्य संस्कृति पर भारतीय संस्कृति का वर्चश्व स्थापित करने के लिए बहुत ही जरुरी है। इसे हम सभी को मिलकर आगे बढ़ाना चाहिये।

– घनश्याम पोद्दार

प्रांतीय महामंत्री, छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

सजा

अेक, बिल्डिंग में आग लागगी। मकान में रैवणिया कई लोग आग में फंसगा। च्यारू मेर हाय तौबा माचगी। इतणै में अेक सरदारजी सेवा भावनां सूं बळती आग में बड़ कै आदमियां री रक्षा करणै री तेवड़ी। वै एक-एक करकै च्यार आदमियां नै आपरै कांधै पर लाद कै बार नै ल्याया। लोग बड़ा राजी हुया अर सरदारजी री मुक्त कंठा सूं तारीफ करी। पण सरदार जी नै इनाम मिलणै री जगां सजा मिली। कारण?

जिण आदमियां नै सरदारजी बारै ल्याया वै च्यारूं का च्यारूं फायर बिग्रेड हाळा था।

सम्पादकीय

बंगाल से राज्यसभा में हिन्दीभाषी विवेक गुप्त निर्वाचित

– सीताराम शर्मा

पश्चिम बंगाल से राज्यसभा के लिये सत्तारूढ़ दल तृणमूल कांग्रेस ने अपने उम्मीदवारों के नाम की घोषणा कर दी है। यह हर्ष का विषय है कि सता दल ने हिन्दीभाषियों को प्राथमिकता देते हुए विवेक गुप्त जो हिन्दी भाषी पत्रकार ही नही, मारवाड़ी समाज से हैं, को राज्यसभा के लिये निर्वाचित कराया है।

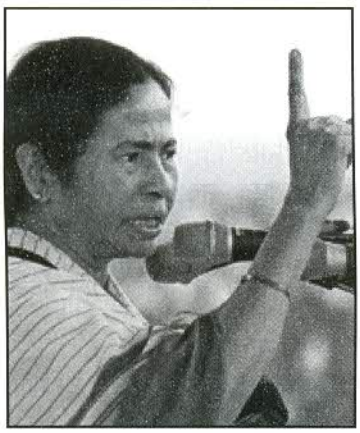

बंगाल की राजनीति में हिन्दीभाषियों के राजनैतिक प्रतिनिधित्व के विषय में पिछले कुछ समय से इस लेखक सहित कई सशक्त आवाज उठाई जाती रही है। शासक दल का इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से एक विशेष दायित्व बनता था एवं वर्त्तमान चुनाव एक शुभ एवं स्वागतयोग्य शुरूआत है। शासक दल इसके लिये साधुवाद का पात्र है।

हिन्दीभाषी समाज के लिये यह खुशी की बात है कि शासक दल एवं उनकी नैत्री मुख्य मंत्री ममता बनर्जी एकमात्र हिन्दी भाषी उम्मीदवार एवं भाषाई अल्पसंख्यक प्रार्थी की जीत सुनिश्चित की है। पूर्व के वर्षों में कांग्रेस एवं वामपंथी दलों ने समय समय पर हिन्दीभाषियों को राज्यसभा में सफलतापूर्वक मनोनीत किया है। कांग्रेस द्वारा अब्दुल मन्नान को अपना उम्मीदवार मनोनीत करने के बाद एक अनिश्चितता की स्थिति बनी थी लेकिन कांग्रेस द्वारा उम्मीदवारी वापस लेने के बाद विवेक गुप्त सहित सभी तृणमुल प्रार्थी निर्वाचित घोषित कर दिये गये।

गत २०११ के विधानसभा चुनाव के दौरान हिन्दीभाषी समाज की बंगाल में राजनैतिक हैसियत एवं प्रतिनिधित्व के संबंध में एक नयी जागरुकता परिलक्षित हुई थी। हिन्दी भाषा-भाषी अपने आपको राजनैतिक रूप से उपेक्षित ही नहीं, कभी-कभी असहाय भी महसूस करते हैं। एक तरफ राज्य में हिन्दीभाषियों की जनसंख्या एवं उनके प्रान्त के औद्योगिक, आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास के योगदान में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है वहीं राजनैतिक भूमिका एवं मान्यता स्पष्टतः कम प्रतीत हो रही है।

विवेक गुप्त

स्वतंत्रता के उपरान्त के आरंभिक २-३ आम चुनावों, विशेषकर १९६७ के बाद से ही हिन्दीभाषी राजनैतिक रूप से कमजोर होते गये हैं। विधानसभा के चुनावों में प्रमुख राजनैतिक दलों द्वारा कम मनोनयन के चलते विजयी सदस्यों की संख्या नगण्य रही। यह कभी विधान परिषद् से नामजद कर एक सीमा तक पूरी की जाती रही, लेकिन १९६९ से विधान परिषद् के विघटन के उपरांत यह प्रतिनिधित्व भी उपलब्ध नहीं रहा।

परिवर्तन की हवा में यह अपेक्षा बनी थी कि हिन्दीभाषी बाहुल्य विधानसभा क्षेत्रों से हिन्दीभाषी उम्मीदवारों को प्राथमिकता मिलेगी एवं वर्षों से राजनैतिक उपेक्षा का शिकार हिन्दीभाषी समाज एक नयी राजनैतिक मान्यता एवं स्वीकृति प्राप्त करेगा। लेकिन ऐसा संभव नहीं हुआ।

विधान परिषद्

ममता बनर्जी के चुनावो घोषणा पत्र में विधान परिषद् को पुर्न स्थापित करने का वायदा किया गया था। हिन्दीभाषी समाज में एक आशा बनी थी कि विधानसभा चुनावों की कमी को विधान परिषद् से उपर्युक्त एवं प्रभावशाली हिन्दीभाषी प्रतिनिधियों को नामजद कर पूरी की जायेगी। लेकिन विधान परिषद् के गठन का प्रस्ताव भी ठंडे बस्ते में चला गया प्रतीत होता है।

राज्यसभा

अप्रत्यक्ष चुनाव के माध्यम से राजनैतिक दल विधान परिषद् एवं राज्यसभा में समाज के विभिन्न वर्गों को राजनैतिक प्रतिनिधित्व प्रदान करते हैं। यह मनोनयन दलों की राजनैतिक सोच एवं मंशा का परिचायक होता है। बंगाल से राज्यसभा में भी हिन्दीभाषी सदस्यों के मनोनयन में लगातार कमी आती रही है। इस सम्बन्ध में आँकड़े बहुत निराशाजनक हैं। पिछले ६० वर्षों में केवल ११ हिन्दीभाषी बंगाल से राज्यसभा के लिये निर्वाचित हुए हैं। राजपत सिंह दुग्गड़ १९५८-७२), बेनीप्रसाद अग्रवाल (१९५४-६०), मेहरचंद खन्ना (१९५६-६२), प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका (१९५६-६२), सीताराम डागा (१९५७-५८), पन्नालाल सरावगी (१९६२-६३), राजकुमार भुवालका (१९६२-६८), सरला माहेश्वरी (१९९०-२००५), चंद्रकला पाण्डेय (१९९३-२००५), दिनेश त्रिवेदी (२००२-०८) एवं आर. सी. सिंह (२००८-१४)। उर्दूभाषियों – मो. सलीम (१९९०-२००१), मो. अमीन (१९८८-९४ एवं २००७-११) तथा ए. एस. मलीहाबादी (२००८-१४) को मिलाकर यह संख्या १४ पहुँचती है। जबकि १९५२ से २०११ तक १३० सदस्यों को बंगाल से राज्यसभा में निर्वाचित किया गया है। भारत के राष्ट्रपति द्वारा बंगाल से राज्यसभा में पिछले ६ दशकों में ८ व्यक्तियों को सीधा नामजद किया गया है। केन्द्रीय सरकार के परामर्श पर मनोनीत इन सदस्यों में कोई हिन्दीभाषी नहीं रहा।

प्रायः सभी राजनैतिक दलों ने हिन्दीभाषियों को राजनैतिक रूप से नजरअंदाज किया है। परिवर्तन के साथ इस सोच में भी परिवर्तन होगा, यह उम्मीद सामाजिक रूप से बनी थी। नई सरकार के मई २०११ में गठन के बाद राज्यसभा के लिए पहला चुनाव गत वर्ष हुआ जिसमें ६ सदस्यों को निर्वाचित किया गया जिसमें कोई भी हिन्दीभाषी नहीं था।

राज्यसभा के लिये २०१२ के चुनाव में ममता बनर्जी द्वारा हिन्दीभाषी विवेक गुप्त को सफलतापूर्वक राज्य सभा में भेजकर एक शुभ एवं आशाप्रद संदेश दिया है। यह उम्मीद बढ़ी है कि पश्चिम बंगाल की राजनीति में अब हिन्दीभाषियों को उनका उपयुक्त एवं बकाया स्थान दिया जायेगा। हिन्दीभाषी विशेषकर मारवाड़ी समाज मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के प्रति आभार व्यक्त करता है। यह विशेष संतोष एवं गर्व का विषय है कि हिन्दीभाषी विवेक गुप्त को चतुर्थ उम्मीदवार होते हुए भी मुख्यमंत्री ने इसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाते हुए कांग्रेस के उम्मीदवार का नाम वापस कराकर विवेक गुप्त की जीत सुनिश्चित की। विवेक गुप्त, राज्य सभा सदस्य को मारवाड़ी सम्मेलन, समाज विकास एवं समस्त हिन्दीभाषी समाज की ओर से हार्दिक बधाई एवं

सपने वो नहीं होते जो हम नींद के वक्त देखते हैं, बल्कि वो होते हैं जिनके पूरा न होने तक हमें नींद न आये।

- पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

अध्यक्षीय

हमारा गौरव : हमारे युवा

– हरि प्रसाद कानोड़िया

हमें गौरव है, हमारे युवा पीढ़ी की प्रगति से। हमारे समाज की युवा पीढ़ी सभी क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित करते हुए आगे बढ़ रही है। व्यवसाय, वाणिज्य उनके संस्कार मे है। हिम्मत, मेहनत, लगन, उच्च विचार, भीतर की आवाज, निड़रता, नुकसान सहने तथा उससे उबरने की क्षमता भी उनके संस्कार में है। ईश्वर पर विश्वास और प्रेम यह गुण उन्हें अपने मूल प्रदेश राजस्थान से प्राप्त हुए है और यह उनके जिन में है। बावजूद, इसके बदलते समय एवं वातावरण का आना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। साधारण वृक्ष यदि चन्दन के वृक्ष के पास रहता है तो वह वृक्ष भी सुगंधित हो जाता है। कोयला की खान में जाने वाले व्यक्ति के तन पर कालिख लगनी ही है। इसी प्रकार आज कल युवक और युवतियों पर पश्चिमी देशों का प्रभाव पड़ रहा है। आज युवक के अलावा युवतियां भी अण्डर ग्रेजुएशन, उच्च शिक्षा, तकनीकी ज्ञान के लिये विदेश जा रही है। यह हमारे लिये खुशी की बात है और हम इसके लिये प्रोत्साहन भी दे रहे है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से उच्च शिक्षा कोष का गठन भी किया गया है। ताकि आर्थिक रूप से असमर्थ युवक युवतियों की सहायता की जा सके। युवक और युवतियों को सोचना है हमारा उद्देश्य क्या है, हमारा लक्ष्य क्या है, हमारी मंजिल क्या है? क्या हम अरबपति बनकर रह जाना चाहते है? क्या हम अपने प्रोफेशनल क्षेत्र में उच्च शिखर पर पहुंच कर रह जाना चाहते है? आपकी अन्दरुनी आवाज बोलेगी – नहीं! नहीं!! नहीं!!!

हम आत्मा है। हम अमृत पुत्र है। हमे आनन्द चाहिए। आपके पास सब कुछ होते हुए भी आप कुछ कमी महसूस करते है। आप खोये-खोये रहते है। इससे डिप्रेशन, पान-गूटका, शराब आदि अन्य गलत आदते आप पर हावी होने लगती है। इसे रोके और आगे बढ़े, अपने संस्करों की रक्षा करें। आप भविष्य है। आपके बच्चों पर आपके संस्कार का प्रभाव पड़ेगा। आप प्रगति करें, उच्च शिखर तक पहूंचे पर अपने आत्मा के धर्म को न भुले। आपको अपने अन्दर रोशनी मिलेगी। जिससे आपका मन इधर-उधर नहीं भटकेगा।

आज के युवा वर्ग को बुजुर्गों से शिकायत रहती है। खास कर विवाहित युवा पीढ़ी को। सास-बहु में अनबन रहती है, क्यों? इस विषय पर दोनों को ही सोचने की जरुरत है। दोनों एक दूसरे का आदर करें। उन्हें स्वतंत्रता देनी चाहिए। अपनी सोच की दिशा मे परिवर्तन लाना जरूरी है। हमें एक दूसरे में परमात्मा को देखना है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि मैं सभी प्राणी में स्थित हूं और सभी प्राणी मेरे अस्तित्व से है।

आप जानते है, हमे प्रेम की गंगा बहानी है। एक दूसरे को अपना-अपना अधिकार और स्वतंत्रता दे। इधर-उधर शान्ति के लिये नही दौड़े। शान्ति परिवार में है, बच्चों में है, परमात्मा की याद मे है। डकैत बाल्मीकी केवल राम राम करके संत हो गये। कवि तुलसी दास भगवान राम की शरण में आकर तुलसी से तुलसीदास हो गये। हमे गुरुओं का आडम्बर का प्रयोजन करने की जरूरत नही है। संत रामसुख दास जी कहते थे – अपने परिवार, अपने संबंधी का पालन पहले करो फिर वृहत समाज में समाज व देश की सेवा। जबकि आज लोग दिखावे में धन बहा देते है। क्या यह बुद्धिमानी और दूरदर्शिता है?

आज कल एक और समस्या हमारे भीतर घर कर गई है। प्रौढ़ हो या युवा या फिर बच्चे, सभी काफी समय टेलिविजन देखते है, जिस कारण घर के कार्यों की अनदेखी होती है। यह शरीर के लिये भी ठीक नही हैं। मनोरंजन एक सीमित स्तर तक होना चाहिए।

हमारा समाज मूल रूप से व्यापार करता था। यही हमारी पहचान है। किन्तु आज के युवा पढ़ लिख कर नौकरी करते है। नौकरी करना कोई बुरी बात नही है, परन्तु अवसर आने पर व्यापार में आये। लक्ष्मी व्यापार में बसती है। कविगुरु रविन्द्रनाथ के वचनों को याद रखें, दिल को विशाल बनायें। ईश्वर से प्रार्थना करे कि आपको दुःख - सुख बराबर सहने की शक्ति प्रदान करें। ●

WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images
PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
Front-lit-flex
Back-lit-flex
Woven P/E
Self Adhesive vinyl
Building wrap
One way vision
Vehicle / fleet graphics
Floor and wall graphics
Reflective Signage
Frosted vinyl
Canvas
Translite
Photo realistic poster paper
Mesh, Tyvek, Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of-the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

समाज को करना होगा आत्मचिंतन

– **सन्तोष सराफ**, राष्ट्रीय महामंत्री

मारवाड़ी समाज.....! एक ऐसा समाज जिसका नाम सामने आते ही लोगों के दिमाग में धनी समाज की तस्वीर उभर कर आ जाती है। एक ऐसे समाज का चेहरा दिखाई देने लगता है, जो धन का अर्जन करना जानता है, प्रतिस्पर्द्धा में लोगों को पीछे छोड़ना जानता है, विषम परिस्थितियों से मुकाबला करना जानता है, हर हाल में अपना काम निकालना जानता है; पर, इन सबके बीच उसकी असली तस्वीर उभरकर सामने नहीं आती, वह है समाज सेवा की। समाज के विकास में उसके योगदान की। आखिर क्यों? घनश्याम दास बिड़ला से लेकर आज भी लाखों-करोड़ों रुपए दान देने वालों ने आखिर ऐसी क्या कसर छोड़ दी कि मारवाड़ी समाज की असली पहचान ही धूमिल रह गयी। आज समाज के ऊपर कोई भी परेशानी या उससे कोई भूल हो जाती है, उसके सारे उपकारों को भुलाकर उसकी खामियां गिनाई जाने लगती हैं। समाज को 'अपराधी' की श्रेणी में खड़ा किया जाने लगता है। आखिर कब मारवाड़ी समाज अपनी असली 'पहचान' हासिल कर पाएगा? कब समाज में उसके महत्व को मान दिया जाएगा? यह सवाल सभी मारवाड़ियों के जेहन में कहीं न कही उठता जरूर होगा। तो यह भी सही है कि जब तक समाज के लोग जगेंगे नहीं तब तक उन्हें असली पहचान भी नहीं मिल सकेगी।

मारवाड़ी समाज जब तक अपने इतिहास के गिरेवान में नहीं झांकेगा, उसे अपनी अहमियत समझ में नहीं आएगी। इतिहास के पन्नों से उन्हें अपने समाज के दानदाताओं, समाज सुधारकों, त्याग करने वालों के गुण समझ में आयेंगे। उनके पदचिह्नों पर चलने की इच्छा जगेगी। मारवाड़ की धरती की एकजुटता–सहयोग और सुनाम के बारे में जानकारी मिलेगी। सबसे बड़ी बात है एकता। कभी मारवाड़ी समाज की एकता मिसाल हुआ करती थी, लेकिन आज उसका सर्वथा अभाव है।

यूं तो मरूभूमि की माटी उपजाऊ नहीं मानी जाती है, पर उसकी सोंधी सुगंध देश के कोने-कोने में महसूस की जाती है। कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए भी इस माटी के सपूतों ने न सिर्फ धन अर्जन में पहली पंक्ति में अपन नाम लिखवाया, बल्कि सेवा कार्यों में भी अपनी माटी का नाम रोशन किया। यहां के मारवाड़ी ने अपने कड़े परिश्रम एवं प्रतिभा के बदौलत वह सब कुछ हासिल किया, जिससे वह सदियों से वंचित थे। प्रकृति ने भी मरूभूमि के लोगों के भीतर निराशा भरने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। यह भी सही है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है और प्रकृति से जो कुछ आसानी से नहीं मिल सका, वह उन्होंने अपने दम पर हासिल कर लिया। यह समुदाय जहां भी बसा वहां की कायापलट करने का प्रयास किया। इसके साथ ही अपनी मातृभूमि को भी नहीं भूला। हर जगह विकास एवं सेवा कार्यों में महती भूमिका निभाता रहा। इन सब में तो पश्चिम बंगाल की माटी सबसे खुशनसीब रही, मारवाड़ी समाज ने यहां पर खुद को स्थापित किया और प्रगति पथ पर बढ़ गए। इस बीच अपने सेवा कार्यों से कोलकाता समेत पूरे राज्य को अपना बनाते गए। बात सिर्फ किसी प्रांत विशेष की नहीं है, देश के सभी हिस्से की है। हर जगह मारवाड़ी सेवा कार्यों में अग्रणी है।

आज कार्पोरेट समाजिक उत्तरदायित्व का जमाना है। मारवाड़ी समाज ने इस 'शब्द' के लागू होने से सदियों पहले से ही अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को समझ लिया था। मारवाड़ी समाज ने देश के कोने-कोने में स्कूल, कॉलेज, धर्मशाला, अस्पताल, प्याऊ, मंदिर आदि बनाकर एक अलग मिसाल कायम की। इस समाज ने अपने अर्जन का दसवां हिस्सा सदैव सेवा कार्यों में लगाया है। अपने धन का सदुपयोग किसी न किसी रूप में सेवा कार्यों के लिए किया है। सब कुछ करने के बावजूद कहीं न कहीं इस समाज पर ऊंगली उठती रही है। आखिर क्यों लोगों को लगता है कि इस समाज का जिस तरह सुनाम होना चाहिए था, वह नहीं हुआ। लगातार किए गए सेवा कार्यों के लिए इस समाज को जितना महत्व नहीं मिला, उससे कहीं ज्यादा धन अर्जन करने, फिजूलखर्ची, दिखावे पर लोगों की नजर गयी। समाज के लोगों ने भी इसे महसूस किया है। उन्हें लगता है कि चाहे उद्योग-धंधों की बात हो या कला, साहित्य, राजनीति, शिक्षा, तकनीकी जैसे क्षेत्र की, हर जगह समाज के लोगों ने परचम लहराया है। फिर भी, इसे सुनाम की बजाय ईर्ष्या क्यों मिली? क्या इसके पीछे आपस की टांग खिंचाई तो नहीं है। क्या समाज गुटों में बंटकर आपस में ही ईर्ष्या–तिरस्कार के बीज बो रहा है? यदि ऐसा है तो इसे बंद करने की आवश्यकता है। समाज की एक समवेत आवाज होनी चाहिए, जहां मारवाड़ी समाज का मतलब एक होना चाहिए। समाज एक होकर ही अपने सत्कर्मों के अनुसार समाज में अपनी साख स्थापित कर एक छवि बना सकता है।

जब तक समाज के लोग अपनी अहमियत के बारे में नहीं सोचेंगे, तब तक उसे अपनी सही पहचान नहीं मिल सकेगी। अपनी बिगड़ी हुई छवि से उबरने के लिए उसके पास कोई और चारा भी नहीं है। धन का अर्जन कर उसका एक बड़ा हिस्सा समाज के हित में अर्पण करने के बाद भी अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाए, तो यह विड़ंबना ही है। ऐसे में समाज के सभी लोगों को एकजुटता के साथ अपनी सुछवि को स्थापित करने पर भी बल देना चाहिए। ●

With Best Compliments From :-

M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211
KOLKATA -700 069

Tele No. : 2210-3480, 2210-3485
Fax No. : 2231-9221
e-mail : roadcargo@vsnl.net

BRANCHES & ASSOCIATES AT

DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM

"टूटते परिवार" - गोष्ठी

"समस्या के समाधान के लिए सोचने की दिशा में परिवर्तन जरूरी"

- सत्यनारायण शर्मा
पूर्व शिक्षामंत्री, छत्तीसगढ़

सभा को संबोधित करते छत्तीसगढ़ के पूर्व शिक्षामंत्री सत्यनारायण शर्मा

"संस्कारवान होना हमारे समाज के लिए बहुत जरूरी है। जब तक हम अपने सोचने की दिशा में परिवर्तन नहीं करेंगे तब तक समस्या का समाधान नहीं हो सकता" - यह कहना है छत्तीसगढ़ के पूर्व शिक्षा मंत्री सत्यनारायण शर्मा का। श्री शर्मा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से २४ मार्च को बांगुड़ एवेन्यू के महावीर सदन में आयोजित "टूटते परिवार" विषयक संगोष्ठी में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अपनी इच्छा अथवा व्यवसाय के कारणों से लोग जब से अलग-अलग रहने लगे हैं तभी से इस समस्या का प्रादूर्भाव हुआ है। जब सब अपने अलग अलग रहने लग रहे हैं तो फिर आत्मीयता की कमी होने लगी। श्री शर्मा ने कहा कि संस्कार विहिन व्यक्ति केवल अपने निजि स्वार्थों को ही देखता है दूसरो को नहीं देखता, यह खराब बात है। श्री शर्मा ने निराशा जताते हुए कहा कि टूटते परिवारों को कैसे बचाया जा सकता है फिलहाल, आज के दिन इसका कोई हल नहीं सूझता। अब ये जिम्मेवारी समाज के वरिष्ठ लोगों की बनती है कि कैसे टूटते घरों को बचाया जाये।

हरिप्रसाद कानोड़िया

ब्रह्मकुमारी केन्द्र की बहन पद्मा ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें पता है कि पहला समाधान हमारे अंदर है। हमारी 'वेल्यू सिस्टम' को फिर से परिभाषित करना होगा। उन्होंने कहा कि परिवार में दो चीजों की कमी है - सहनशीलता और सम्मान, इसीलिए परिवार टूट रहे हैं। संबंधों से ज्यादा 'इगो' को महत्व न दे। इससे पूर्व अधिवक्ता जुगलकिशोर जैथलिया ने संस्कारों की कमी एवं आर्थिक विषमता को कारण मानते हुए कहा कि पारिवारिक टूटन को रोकना मुश्किल है। अमीरी-गरीबी की लड़ाई बढ़ रही है। जमाने की कसमसाहट आज ज्यादा है। जमाना बदल गया है। मेरा क्या होगा - मेरा सबसे पहले, परिवार बाद में। परिवार के बारे में लोगों की सोच बदली है। उन्होनें कहा कि आज हम जिस राह पर चल रहे हैं उसका परिणाम विघटन के सिवाय कुछ भी नहीं हो सकता। हम लोग जिस प्रकार की शिक्षा दीक्षा एवं परम्परा में चल रहे हैं परिवार टूटेगा ही, एक जूट नहीं हो सकता।

ब्रह्मकुमार बहन पद्मा

समारोह के प्रधान वक्ता एवं मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने कहा कि हमारी बैठकों के दो उद्देश्य है - सम्मेलन को आप तक पहुँचाना तथा सामाजिक

समस्याओं पर मिल बैठकर चिंतन करना। उन्होंने बताया कि यह अपने ढंग की अलग संस्था है - प्रायः संस्थाए अपनी खूबियों के बारे में बात करती है लेकिन मारवाड़ी सम्मेलन अपनी खामियों व कमियों पर भी चर्चा विवेचना करता है, सोचता है। श्री शर्मा ने कहा कि पर्दा प्रथा, लड़कियों की शिक्षा, विधवा विवाह आदि इन सब समस्याओं पर मारवाड़ी सम्मेलन ने काम किया है।

श्री शर्मा ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि मारवाड़ी समाज शिक्षा, साहित्य, उद्योग, प्रशासन आदि हर क्षेत्र में बढ़े हैं लेकिन कहीं न कहीं नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों में गिरावट आयी है। उन्होंने कहा - 'पहले संचय की प्रवृति हमारी खूबियाँ थी, आज दिखावा एवं आडम्बर बढ़ गया है।' श्री शर्मा ने धन के कुप्रभाव की चर्चा करते हुए कहा कि हमें टका धर्म को अलविदा करना होगा। आज परिवार में धनी भाई ही 'बड़ा भाई' है।

श्री शर्मा ने धर्म के व्यवसायीकरण तथा बढ़ते धार्मिक आडम्बरों पर भी चिंता व्यक्त की।

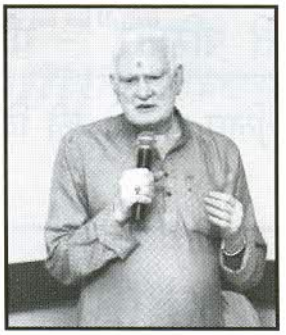

जुगलकिशोर जैथलिया

सीताराम शर्मा

रामअवतार पोद्दार

संजय हरलालका

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया ने कहा कि परिवार में रहते हुए सकारात्मक सोच रखनी होगी। परिवार में आपसी प्रेम, बड़ों के प्रति सम्मान तथा सहनशीलता से परिवारों को टूटने से बचाया जा सकता है। श्री कानोड़िया ने कहा कि प्रेम के साथ किसी भी समस्या का समाधान किया जा सकता है।

इस अवसर पर श्री सत्यनारायण शर्मा एवं बहन पद्मा को सम्मेलन का प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। स्वागत भाषण दिया सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रामअवतार पोद्दार ने तथा सफल संचालन किया संयुक्त राष्ट्रीय मंत्री संजय हरलालका ने। धन्यवाद ज्ञापन दिया सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथालिया ने। कार्यक्रम का संयोजन किया कैलाशचन्द्र अग्रवाल एवं प्रमोद गोयनका ने।

दर्शकदीघा

दूरदर्शन पर परिचर्चा

पश्चिम बंगाल में शिल्प : हाल और हकीकत

पश्चिम बंगाल में गत मई २०११ मे सरकार परिवर्त्तन के बाद से ही पश्चिम बंगाल में आयोजित प्रगति के विषय में चर्चा तेज हुई है। बुद्धदेव भट्टाचार्य़ के नेतृत्व मे बामपंथी सरकार ने अपने कार्यकाल में आद्योगिक विकास पर काफी जोर दिया था एवं देशी एवं विदेशी निवेशकों को आमंत्रित किया था। सिंगुर में टाटा मोटर्स के कारखाने की स्थापना के विवाद के उपरान्त औद्योगिक माहौल के बिगड़ने के आसार दिखने लगे। कृषि बनाम उद्योग के प्रश्न पर एक नया विवाद खड़ा हुआ। इसी बीच विधान सभा के चुनाव में ३४ वर्षों के बाद बामपंथी सरकार की पराजय के साथ एक नया परिवर्तन घटा एवं ममता बनर्जी के नेतृत्व में तृणमूल एवं कांग्रेस की साझा सरकार ने सत्ता की बागडौर संभाली।

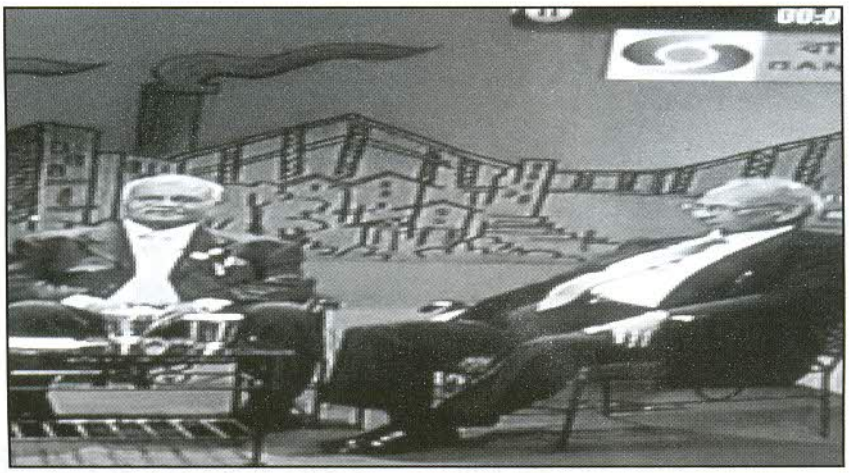

ममता बनर्जी जिसे टाटा मोटर्स के कारखाने को गुजरात मे स्थानांतरित करने के लिये जिम्मेवार माना जाता रहा है के सत्ताशीन होने से बंगाल के औद्योगिक विकास पर प्रश्न खड़े होने लगे। ममता बनर्जी सरकार ने अपने आरंभिक दिनों मे ही यह स्पष्ट कर दिया कि सरकार उद्योगों के विरुद्ध नहीं है, सवाल कृषि या उद्योग का नही बल्कि कृषि एवं उद्योग का है क्योंकि दोनों ही आवश्यक है। सरकार ने चेम्बर आफ कामर्स के माध्यम से उद्योगपतियो से वार्तालाप का एक नया दौर आरम्भ किया जिससे उनका विश्वास प्राप्त किया जा सके तथा उन्हें निवेश के लिये प्रोत्साहित किया जा सके।

इसी संदर्भ एवं माहौल में दूरदर्शन ने "पश्चिम बंगाल में शिल्प : हाल एवं हकीकत" विषयक एक महत्वपूर्ण परिचर्चा का आयोजन किये जिसे गत २० फरवरी को प्रसारित किया गया।

परिचर्चा मे भाग लिया सर्वश्री **हरिप्रसाद कानोड़िया, सीताराम शर्मा** एवं **जुगल किशोर सराफ** ने जो सामाजिक एवं औद्योगिक क्षेत्र के सुपरचित नाम है तथा साथ ही मारवाड़ी सम्मेलन से घनिष्ठ रूप मे जुड़े हुए है।

प्रस्तुत है परिचर्चा के कुछ प्रमुख अंश :

श्री हरिप्रसाद कानोड़िया – पश्चिम बंगाल में लघु एवं मध्यम उद्योग का सदैव महत्वपूर्ण योगदान रहा है, अतः यह आवश्यक है कि छोटे एवं मझौले उद्योगों को विशेष प्रोत्साहन दिया जाये। सरकार को इसके लिये विशेष योजनाओ के घोषणा करने की जरूरत है। साथ ही सरकार को उद्योगो को बढ़ावा देने के लिये सक्रिय सहयोग की नीति अपनानी होगी। इस संदर्भ मे उन्होंने अपने गुजरात सरकार के साथ अनुभव की चर्चा की जहां सरकार स्वयं सक्रिय एक सचेष्ट थी निवेश को आमंत्रित करने के लिये। उन्होने तकनीकी शिक्षा के विकास की भी बात की क्योंकि आने वाले समय में तकनीको का बड़ा अभाव दिख रहा है एवं बंगाल में शिक्षित बेरोजगारी को दूर करने के लिये यह आवश्यक है। उन्होंने कहा कि पश्चिम

बंगाल में औद्योगिक विकास के अच्छे अवसर है लेकिन उन्हें साकार करने के लिये इन्फ्रास्टक्चर को मजबूत करना होगा एवं मानव संशाधन के विकास की आवश्यकता है।

इस परिचर्चा का पुनः प्रसारण शनिवार २८ मार्च को दूरदर्शन पर किया गया।

श्री सीताराम शर्मा – सरकार में परिवर्त्तन के पश्चात एक नयी उम्मीद एवं अपेक्षा बनी है लेकिन सरकार की ओद्योगिक नीति स्पष्ट नही है। अतः यह आवश्यक है सरकार अपनी उद्योग सम्बन्धी नीति को पूर्ण रूप से स्पष्ट करे। सरकार ने यह तो साफ किया है कि वह क्या नहीं करेगी, जैसे उद्योग के लिये जमीन के मामले मे सरकार की कोई सीधी भूमिका नही होगी, उद्योगो को जमीन की व्यवस्था सीधे तौर पर करनी होगी। लेकिन सरकार को यह भी स्पष्ट करना चाहिये कि उद्योगो को बढ़ावा देने के लिये एवं नये निवेश को आमंत्रित करने के लिये उसकी नीति क्या होगी। सरकार ने उद्योगपतियों से सीधे संवाद का कार्यक्रम हाथ में लिया है यह स्वागतयोग्य है लेकिन चेम्बर आफ कामर्स के प्रतिनिधि के साथ उद्योग मंत्री की मासिक बैठक का अभी तक ठोस नतीजा नही निकला है। उन्होने कहा कि हांलाकि महीने मे सरकार के कार्यकलापो का आकलन करना जल्दीबाजी होगी लेकिन सरकार का दिशा-निर्देश ओद्योगिककरण एवं निवेश की तरफ इंगित करता है, जरूरत है ठोस कदमों एवं निर्णयो की।

श्री जुगल किशोर सराफ – निवेश को आकर्षित करने के लिये अन्य राज्यों की तुलना मे अधिक आकर्षण सुविधाये एवं नीतियां आवश्यक है। वैश्विक बाजार व्यवस्था मे यह आवश्यक है। सरकार अपनी नीतियों को स्पष्ट करने के साथ-साथ उन्हे लागू कर सके यह भी आवश्यक है। बंगाल में औद्योगिक विकास की अपार संभावनाएं है आवश्यकता है सही नीति एवं सही माहौल की।

दूरदर्शन के कोलकाता केन्द्र पर नयी सरकार के गठन के पश्चात आयोजित ऐसी प्रथम-परिचर्चा को महत्वपूर्ण माना गया एवं विभिन्न समाचार पत्रों ने इसका विश्लेषण किया।

कविता

व्यक्ति के भीतर दबा सरकारी तंत्र

- शिव सारदा

अब
मुझे अपने बेटों पर
गर्व होने लगा है
सरकारी वकील / डॉक्टर - अफसर
थानेदार - चपरासी / सरकारी
बंगला वह भी गोरमेंट का
टीवी-फ्रीज / बीबी-बच्चे
गाड़ी-घोड़े / सास-ससुर
किंतु
यह जो छोटा है ना
बस!
थोड़ी - सी चिंता उसी की है
कविता लिखता है
हाँ!
यह जीने के सही ढंग से
सचमुच अपरिचित है
और
कविता / किताबों
अखबारों से
परिवर्तन की दिशा
बदलना चाहता है
और / वे लोग / जो इसके साथी हैं
हथियार बनाने में जुटे हैं -
कविता को
किंतु
फिर भी / मुझे अपने बच्चों पर
गर्व करना
एक जरूरत है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन : होली प्रीति सम्मेलन

खेली फूलों की होली : भाईचारे का संदेश

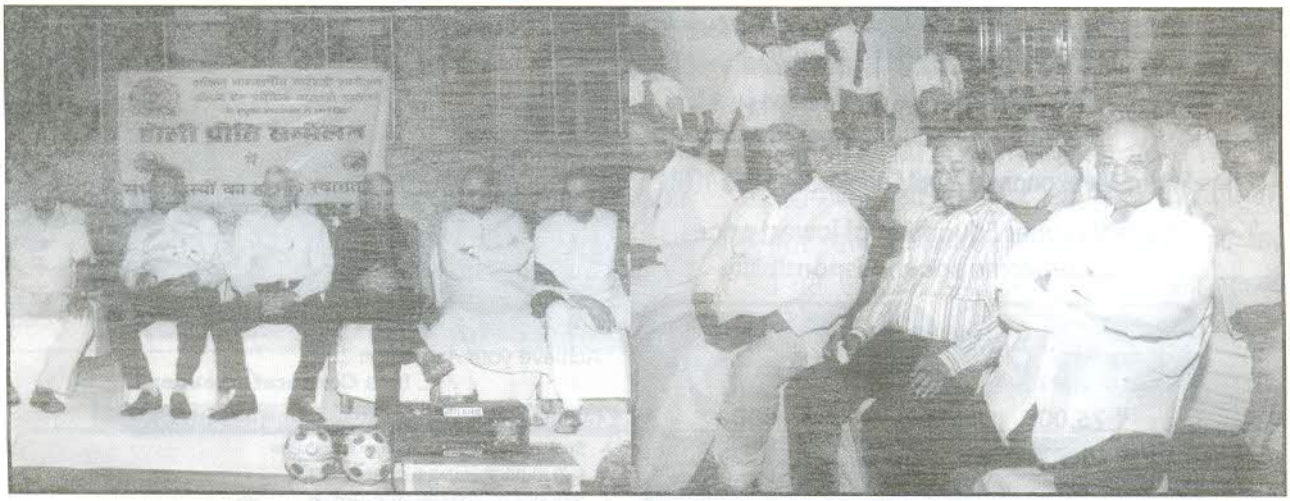

मंच पर संस्था के पदाधिकारी व अतिथिगण तथा हाल में श्रोतागण।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त तत्वावधान में बालीगंज स्थित मेंडाविला गार्डेन में होली प्रीति सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सदस्यों ने रंग-बिरंगे फूलों से होली खेली। मौके पर सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि होली पर हमें आपसी वैमनस्य आदि भुलाकर भाईचारे का संदेश देना चाहिए। पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष विजय गुजरवासिया ने बताया कि समाज सेवा के क्षेत्र में हमने कई कार्यक्रम हाथों में ले रखे है, जिनमें शिक्षा में सहायता, कन्या के विवाह में सहयोग, बच्चों को कम्प्यूटर शिक्षा आदि शामिल है। सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री संतोष सराफ, प्रांतीय महामंत्री राम गोपाल बागला, उद्योगपति हरिप्रसाद बुधिया, समाजसेवी पुष्करलाल केडिया, डॉ. जुगल किशोर सराफ, रतन शाह, भानीराम सुरेका, कैलाश पति तोदी व कई अन्य प्रीति सम्मेलन में मौजूद थे। कार्यक्रम का संयोजन किया विजय डोकानिया ने एवं संचालन किया संयुक्त मंत्री संजय हरलालका ने। इस अवसर पर पवन सराफ के बेहतरीन फाल्गुनी गीतों एवं रंजीत मलहोत्रा के नृत्व को सभी ने सराहा।●

नृत्य व संगीत की एक झलक।

IISD

SREI Foundation

A Gateway to Careers

"Educate Morally & Technically"
— Swami Vivekananda

Swami Vivekananda Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

3 Yrs. **BBA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA+ PGPM** ₹ 85,000
3 Yrs. **BCA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA (Hospital Admin.)** ₹ 95,000

ELIGIBILITY & SELECTION

FOR MBA

- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- ★ APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

FOR BBA & BCA

- 10 + 2 PASSED FROM ANY HIGHER SECONDARY BOARD/COUNCIL

Assistance for placement

Eminent Faculty
Regular / Weekend Classes
AC Classrooms/Hostel

Achieve your Aspiration ...
... be a **Corporate Leader !**

Complimentary Courses with MBA, BBA, BCA :

- Spoken English • Foreign Languages
- Soft Skills Training from HCL - CDC
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development

Other Courses :

- Company Secretaryship • Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- **Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi**
- **NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview**
- **Certificate Course in Computer Applications**
- **Advanced Diploma in Financial Management**
- **Entrepreneurship Development**
- **Vocational & Technical Training**
- **Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)**
- **WBCS (Executive) and Judicial Services Examination (Prelim and Main)**
- **Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)**
- **Diploma in Banking and Finance**
- **Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I**

Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

Unit - I

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in
Website : www.iisdedu.in

Unit - II

9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor
Kolkata- 700017, Ph : 4001 9894
E-Mail : iisdunit2@gmail.com
Website : www.iisdedu.in

भ्रूण हत्या के प्रतिवाद में संकल्प

अखिल भारतीय भारवाड़ी महिला सम्मेलन – पश्चिम बंगाल का छठवां अधिवेशन कलकत्ता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती स्मिता चेचाणी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा श्रीमती शारदा लाखोटिया अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़ीया एवं पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, श्री रतन शाह, श्री विजय गुजरवासिया, श्रीमती श्वेता टिबड़ेवाल, मंजु डोकानिया आदि कई उपस्थित लोगों ने भ्रूण हत्या न हो, इसका संकल्प लिया।

अखिल भारतीय समिति एवं कार्यकारिणी समिति की संयुक्त बैठक ८ अप्रैल को हरिद्वार में

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक अखिल भारतीय समिति एवं कार्यकारिणी समिति की संयुक्त बैठक आगामी रविवार, ८ अप्रैल २०१२ को प्रातः ११ बजे से सम्मेलन के नवगठित प्रांत उत्तराखण्ड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में तीर्थनगरी हरिद्वार में आयोजित है।

इस अवसर पर निम्न विषयों पर विचार-विमर्श किया जाएगा।

(क) गत बैठकों की कार्यवाही पारित करना,

(ख) महामंत्री की रपट,

(ग) आर्थिक स्थिति की समीक्षा

(घ) समाज सुधार, संगठन एवं कार्यक्रम संबंधी प्रस्तावों पर विचार-विमर्श आदि।

सभा की अध्यक्षता करेंगे सम्मेलन सभापति **श्री हरिप्रसाद कानोड़िया।**

सदस्यगण यदि इस संबंध में किसी भी प्रकार की जानकारी जानना चाहें तो सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ (०९८३००२१३१९) अथवा संयुक्त मंत्री श्री संजय हरलालका (०९८३००८३३१९/ ०९८०४१५४११५) उत्तराखण्ड प्रांत के अध्यक्ष श्री रंजीत जालान (०९८९७५८३२५८) से मोबाईल पर सम्पर्क कर सकते है।

आनंद और उत्साह से जिएँ बुढ़ापे का जीवन

– भानीराम सुरेका

अपने-अपने समय पर सभी वस्तुएं सुंदर लगती हैं : बच्चों का भोलापन, किशोरों का रूठन, तरुणों का उत्साह, प्रौढ़ों की परिपक्वता एवं बुढ़ापे की विशिष्टता। इन आयु खंडों की अपनी-अपनी विशेषता तो है, पर एक के साथ दूसरे की तुलना नहीं की जा सकती है न किसी को श्रेष्ठ या निकृष्ठ ठहराया जा सकता है। बचपन अपनी जगह सुहाना है और तरुणाई की अपनी छटा है। दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएं हैं। कोपलें उगती हैं, पत्ते बढ़ते हैं, फूल खिलते और फल आते हैं। सभी अपनी-अपनी जगह शोभायमान होते हैं, किंतु परस्पर तुलना करने का कोई अर्थ नहीं। नमक अच्छा है या मीठा? इस प्रश्न का सीधा उत्तर नहीं दिया जा सकता। दाल में डालने के लिए नमक की जरूरत पड़ती है और दूध में शक्कर मिलाई जाती है। दोनों की अपनी-अपनी जगह उपयोगिता है और आवश्यकता भी।

पौधों की टहनियों की लकड़ी गीली होती हैं। उन्हें मोड़ा-मरोड़ा और टोकरी जैसे ढांचे में ढाला जा सकता है, पर तने की विशेषता अनोखी ही है। मजबूत शहतीर उसी से बनते हैं। टहनियां कितनी ही लचीली एवं सुन्दर क्यों न हों, पर वे लट्ठे का काम नहीं दे सकतीं।

बुढ़ापा कुरूप है या सुन्दर? इसे समझने का अपना-अपना दृष्टिकोण है। तरुणाई जैसे अटखेलियां, उमंगे और मुस्कानें बुढ़ापे में नहीं होतीं और न चेहरे पर ही वैसी गुलाई, लालिमा और चमक रहती है, पर उसके स्थान पर जो नया उभरता है, उसे अपनी जगह महिमा और गरिमा से भरा-पूरा समझा जा सकता है। चेहरे की झुरियां, सफेदी, बेदांती मुख यह बताता है कि इस व्यक्ति पर परिपक्वता आ गई। ज्ञान, अनुभव अब ऊंचाई तक पहुंच गया है। यह वरिष्ठता की निशानी है। समाज में उनकी प्रतिष्ठा और गरिमा समझी जाती है, इसलिए महत्वपूर्ण प्रसंगों में लोग उनसे परामर्श लेने पहुंचते हैं। उनके निर्णय-निर्धारणों को महत्व देते हैं। उनका नमन-वंदन किया जाता है। ऐसे लोगों को देखते ही श्रद्धा के अंकुर फूट उठते हैं और उन्हें सम्मानपूर्वक ऊंचे स्थान पर बिठाया जाता है। यह गरिमा अनायास ही मिली हुई नहीं होती। उसके पीछे बहुमूल्य अनुभूतियां और विचारधारा होती हैं।

कच्चे आम भारी होते हैं। गोल और खट्टे महकदार भी। पकने पर वह स्थिति नहीं रहती, पिलपिलापन आ जाता है, मिठास बढ़ जाती है, वजन भी हलका होता है। इतने पर भी पके आम अधिक दाम के बिकते हैं। काले बालों को भौंरे से उपमा दी जाती है, पर सफेद बाल तो हंस जैसे होते हैं, मानो चांदी के तारों से उन्हें बनाया गया है। बच्चे का बिना दांत का मुंह हंसते समय कितना सुन्दर लगता है। बूढ़े के पोपले मुंह की भी वही स्थिति होती है। यों कामुकता, विलासिता की दृष्टि से वे फिसड्डी हो जाते हैं, फिर भी युवकों की अपेक्षा, उनकी बातों में वजन होता है। समझदारी की दृष्टि से अनुभवगम्य ज्ञान ऐसे निर्णायक निष्कर्षों तक पहुंचाता है कि उस वृद्धावस्था पर जवानी निछावर करने को मन करता है।

जॉर्ज वर्नार्ड शॉ कहते हैं -- **'बुढ़ापा एक सिद्धि है, पूर्णता की मंजिल है और समय की धरोहर।'**

व्यक्ति और समाज की स्थिति का अन्वय करने वाले उसे दूरबीन या खुर्दबीन कह सकते हैं। बुढ़ापा श्रद्धा-सम्मान से लदा हुआ बटवृक्ष है, जिसकी छाया में बैठकर नई पीढ़ी बहुत कुछ सीख सकती है और सांत्वना पा सकती है।

बुढ़ापे में खीझते वे हैं, जिन्होंने बुढ़ापे का पूर्वाभास नहीं किया और उसके स्वागत की समुचित तैयारी नहीं की। जवानी की उच्छृंखलता बुढ़ापे में लौट नहीं सकती और न उतनी स्फूर्ति रहती है, फिर भी जो कुछ रहता है या बढ़ता है, वह ऐसा होता है, जिस पर संतोष किया जा सकता है और गर्व भी। जिसने अपने बुढ़ापे को स्वयं सम्मानीय बनाया, उसका अन्यत्र भी अभिनंदन होता है। बुढ़ापा शरमाने की नहीं, वरन् प्रफुल्लता बिखेरने तथा बटोरने का वय है।

"बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है" मुंशी प्रेमचंद की अमर कहानी बूढ़ी काकी की ये पंक्तियाँ बुढ़ापे पर एकदम सटीक बैठती है। बुढ़ापा मनुष्य के जीवन का आखिरी चरण है। यह वह समय है जब मनुष्य में बचपन की आदतें लौट आती हैं। हाथ-पैर से अक्षम

होकर मनुष्य बच्चों की तरह घर के सदस्यों से यह अपेक्षा रखता है कि वे उनकी मनोभावनाओं को समझें एवं स्वतःस्फूर्त भाव से उनकी सेवा करें। घर में खाने-पीने की सामग्री से लेकर अन्य सभी चीजों को पाने के लिए बुढ़ापे में एक स्वाभाविक लालसा होती है। नहीं मिलने पर रूआँसा होकर अपनी जिद्द मनवाने की भी प्रवृति देखी जाती है।

यह वो समय है जब मनुष्य की बचपन की लापरवाही और जवानी की मौज-मस्ती सदा के लिए समाप्त हो जाती है। बूढ़ा होना एक प्राकृतिक प्रक्रिया है और उम्र के बढ़ने से हर व्यक्ति बूढ़ा होता है। मगर यह जरूरी नहीं कि हर बूढ़ा बुजुर्ग बन जाए। जब कोई व्यक्ति बूढ़ा होने के बाद भी अपने मन के अडियल घोड़े को लगाम नहीं डाल सकता, हमेशा क्रोध का गुलाम बनकर रहता है, अंहकार और जिद का त्याग नहीं कर सकता और लोभ-लालच के चक्कर में फंसा रहता है तो वह बुजुर्ग का पद नहीं पा सकता। बुजुर्ग बनने के लिए मन को मोड़ना और अहंकार को तोड़ना पड़ता है। इसके पीछे कारण यह है कि बुजुर्ग अवस्था मांग करती है सूझ-बूझ की, सब्र और शांति की, संयम और सहनशीलता की और दिमाग की। समझदार परिवार बुजुर्गो को अपनी शान समझते है। बुजुर्ग लोग जहां दिशा प्रदान करते है वही अपनी समझदारी से परिवार की शांति बनाए रखते है। घर में बैठा बुजुर्ग चाहे वह माता-पिता के रूप में, चाहे वह दादा-दादी, नाना-नानी या किसी अन्य रूप में हो, वो घर की छत की तरह होते हैं। वृद्धों के रहते सारे परिवार के लिए शांति और सुरक्षा का एहसास होता है। बच्चो के लिए तो दादा-दादी से अच्छा मित्र हो ही नहीं सकते। बुजुर्गो का मान-सम्मान सबसे अच्छी पूजा, उनकी सेवा-सम्माल सबसे अच्छा तीर्थ और उनका आशीर्वाद परमात्मा की कृपा माने जाते है। उन्होंने अपने जीवन में सभी रंग देखे होते हैं। सुख-दुःख और लाभ-हानि सहन किए होते है। इस अनुभव के कारण ही उनकी हर सलाह अधिक वजनदार और व्यवहारिक होती है और उनका सुझाव बेकार नहीं जाता है।

मगर अक्सर यह देखा जाता है कि बुढ़ापे में परिवार और समाज की वजह से कम, मनुष्य अपनी गलतियों की वजह से बुढ़ापे में कष्ट पाता है। कोई भी आसानी से जीवन की इस दशा को स्वीकार करना नहीं चाहता और यही सभी कलह की जड़ बन जाता है। यदि हम यह मान कर चलें कि जवानी को एक दिन बुढ़ापे में कदम रखना ही है तो शायद इतनी परेशानी नहीं हो।

बुढ़ापा कोई बीमारी नहीं है, जो गिने-चुने लोगों को ही होती है। यह तो सभी को आनी है। इसीलिए बुद्धिमता इसी में है कि जवानी के दिनों से ही इसकी तैयारी शुरु की जाए। मेरी अपनी मान्यता है कि बुढ़ापे की कोइ उम्र नहीं होती। बहुत से लोग ८०-९० की उम्र में भी सक्रिय रहते हैं और नियमित रूप से अपना काम-काज करते रहते हैं। वरिष्ठ उद्योगपति बाबू बसंत कुमार बिड़ला को देख लिजिएए। ९२ की उम्र में भी वे सक्रिय हैं। कई नेता इसी उम्र में राजनीति में सक्रिय रहे हैं। पश्चिम बंगाल के भूतपूर्व मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने ९० की उम्र पार करने के बाद भी शासन किया। यदि बुढ़ापे का भय मिट जाए और यह समझ में आ जाए कि बुढ़ापे का भी अपना आनन्द है तो बुढ़ापा कष्टदायी नहीं होता। आदमी सोचता है बूढ़ा हो जाऊंगा तब कोई नहीं पूछेगा। कोई पास नहीं आएगा। अकेला रह जाऊंगा। वह इसी चिंता में डूब जाता है। पर जब दृष्टि बदल जाए कि बुढ़ापे का भी अपना आनन्द होता है, एकांत में रहने का अपना आनन्द होता है तो वह व्यक्ति सर्वत्र आनन्द ही आनन्द पायेगा। जो आदमी सदा लोगों के बीच रहा है, जिसने कभी एकांत का अनुभव नहीं किया, वह नहीं समझ सकता कि एकांत का क्या आनन्द है? किंतु जिसने अकेले होकर अनुभव कर लिया या स्वयं को सत्य के लिए समर्पित कर दिया उसका कितना आनन्द होता है, दूसरा आदमी नहीं जान सकता।

बुढ़ापे में सुखमय जीवन बिताने के लिए जरुरी है कि हम थोड़ी बहुत सावधानी बरतें और कुछ नियमों का पालन करें। ऐसा कुछ भी न करें जिससे शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो। हमेशा सकारात्मक सोच बनाए रखें। परिवार और समाज के लिए उपयोगी बनें। तन और मन को स्वस्थ रखें। भोजन में संयम बरतें। आजकल महानगरों में तन और मन को स्वस्थ रखने के लिए बहुत से साधन हैं। जगह-जगह स्वास्थ्य केंद्र हैं। पार्कों की व्यवस्था है जहां घूमने-टहलने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं। आजकल जगह-जगह सीनियर सिटिज़न क्लब बन गए हैं जहां बैठकर अपने हमउम्र लोगों के साथ गप्प-सप्प की जा सकती है। इससे मन की कुंठा खत्म हो जाती है। दूसरों की सुनने एवं अपनी कहने से ताज़गी मिलती है। सुबह-शाम टहलने से शरीर में स्फूर्ति बनी रहती है।

सच पूछिए तो बुढ़ापे में सुखी जीवन जीने का मूलमंत्र यह है कि परिवार पर आश्रित न होकर व्यक्तिगत सोच से बुढ़ापे को अधिक सुखी, शांतिपूर्ण एवं सुंदर बनाएँ। अपने को समय के अनुसार बदलें एवं नयी पीढ़ी को यह एहसास कराएं कि बुढ़ापा व्यर्थ नहीं कारगर तरीके से काम करने का समय भी हो सकता है।●

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

उच्च शिक्षा कोष
आवेदन पत्र आमंत्रित

समाज में उच्च एवं तकनीकी शिक्षा को प्रोत्साहित एवं सहयोग प्रदान करने हेतु अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अन्तर्गत एक **"उच्च शिक्षा कोष"** का गठन किया गया है।

मेधावी एवं जरुरतमन्द छात्र-छात्राओं से उच्च (पोस्ट ग्रेजुएट) प्रबन्धन, तकनीकी आदि शिक्षा में सहयोग के लिये आवेदन पत्र आमंत्रित है। उक्त आवेदन पत्र का प्रान्तीय अथवा जिला सम्मेलन शाखाओं द्वारा अनुमोदित होना आवश्यक है।

आवेदन पत्र में नाम, पूरा पता, फोन, ईमेल, शिक्षा, अभिभावक की वार्षिक आय के साथ जिस उच्च शिक्षा के लिये सहयोग प्रार्थित है उससे सम्बन्धित सभी विवरण, कोर्स शुल्क, सहयोग राशि आदि जानकारी भेजने की कृपा करें।

अतिरिक्त जानकारी के लिये सम्पर्क करे –

महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
१५२-बी, महात्मा गांधी रोड
कोलकाता - ७०० ००७
फोन एवं फैक्स – ०३३-२२६८०३१९।

हरिप्रसाद कानोड़िया
अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

प्रह्लाद राय अग्रवाल
अध्यक्ष, उच्च शिक्षा
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

उच्च शिक्षा कोष में मुक्त हस्त दान दें – ८०जी के अन्तर्गत कर मुक्त
Cheques may be issued in favour of "Marwari Sammelan Foundation".

तनावमुक्ति का साधन है संगीत

– आचार्य विद्यानंद

आचार्य जिनसेन एक महाकवि थे। उन्होंने 'महापुराण' नाम का एक काव्य भी लिखा है। उसमें सारे रसों का तथा आदिनाथ भगवान के जीवन चरित्र का मुख्यरूप से वर्णन है।

आप जानते ही हैं कि अयोध्या में आदिनाथ भगवान का जन्म हुआ था। वे प्रजा को जीवनोपयोगी बातें बताते रहे और अंत में संसार का त्याग करके मोक्ष गये। उन्होंने अपने जीवन के माध्यम से लोगों को गृहस्थी में प्रवेश करने के बारे में तो बताया ही, उसके साथ ही त्यागमार्ग भी बताया। राज्य किस प्रकार करें? इसे भी उन्होंने बताया। असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, कला और विद्या के साथ दण्डनीति (साम, दाम दण्ड, भेद) की भी बात बताई। उन्होंने अपनी संतानों को कला भी सिखाई। महापुराण पढ़ने से हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है। महापुराण जैनधर्म के ज्ञान का कोष है। उसमें सभी विषय है।

संगीत भी अपने आप में एक महत्वपूर्ण कला है। आप लोग पूजा करते समय बोलते ही हैं –

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्ध्यकैः।
धवलमंगलगानरवांकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।

अर्थात गीत गाते हुए पूजा करनी चाहिए। मतलब स्वरबद्ध, लयबद्ध में बोलना चाहिए। ऐसे ही कुछ बोलते रहें जो कर्णप्रिय न लगें तो मन में आनंद उत्पन्न नहीं होता है। संगीत में भी महान शक्ति होती है। कितना ही जहरीला सांप हो, बीन बजाते ही वह अपने क्रोध को, अपने जहर को भूल जाता है और उस बीन की धुन में मस्त होकर झूमने लगता है। जब सांप जैसे क्रूर प्राणी को भी संगीत शांत कर देता है तो आपका मन भला संगीत से शांत क्यों न होगा। बालक को लोरी सुनाते ही वह आराम से, शांत मन से सो जाता है। घोड़े, बैल, हाथी आदि के गले में लोग घंटी बांधते हैं। उस घंटी की आवाज को सुनते-सुनते वे चलते चले जाते हैं, उन्हें थकान नहीं लगती। घंटी बजने से उन्हें आनंद आता है इसलिए वे अपनी थकान भूल जाते है।

अन्य धर्म की तरह जैन शास्त्र में भी संगीत का बहुत महत्व है। अपने देश में करीब-करीब सभी भाषाओं में अलग-अलग राग-रागिनियों में भजन-कीर्तन हैं। सूरज उगने के समय पंचपरमेश्वर की स्तुति उदय राग में की जाती है और सूरज अस्त होते समय यमन राग में आरती की जाती है। पं. आशाधर ने संस्कृत में लिखा है–

जय मंगलं नित्य शुभ मंगलम्।
जय विमल गुण निलय पुरुदेव! ते।।
जिन वृषभ वन्दारुवृन्दितचरण
मन्दार कुन्दसित कीर्तिधर! ते।।

यह यमन राग कहलाता है। यह आरती है। यह आरती सूर्यास्त के समय गाई जाती है। प्राचीनकाल में हमारे यहां बड़े-बड़े राजे महराजे होते थे, सेठ लोग होते थे, वे थाली में रत्नों को रखकर उनके शुभ प्रकाश से आरती करते थे।

एक कांबोज राग होता है वह रात को बारह बजे गाया जाता है। महाराष्ट्र के एक विद्वान ने लिखा है कि भगवान के अभिषेक के समय ६४ प्रकार के चामर एवं ६४ प्रकार के संगीत के वाद्य वजाये जाते थे। उन सभी चामर/वाद्यों के चित्र के साथ उस विद्वान ने ये बात लिखी है। क्या-क्या वैभव थे हमारे यहां! अब कोई ताली बजाता है तो कोई थाली बजाता है।

इसलिए कहने का तात्पर्य है, संगीत अपने आप में महत्वपूर्ण है। आप एकाग्र होकर गाइए, फिर देखिये आनंद ही आनंद मिलता है।

संगीत सुनने से आप अनेक रोगों से बच सकते हैं। जो संगीत सुनता है या जो संगीत में गाता-बजाता है, उसे

तनाव नहीं होता है। इसलिए प्राचीन काल में महिलायें घर में तंतुवाद्य में गीत गाती थीं। तंतुवाद्य मंगल वाद्य होता है, इसलिए उसके बजने से आस-पास का वातावरण मंगलमय हो जाता है। 'संगीत' नाम का एक संस्कृत ग्रंथ भी है, जिसका हिंदी में अर्थ भी लिखा गया है। यह ग्रंथ बनारस यूनिवर्सिटी में एम.ए. के कोर्स में पढ़ाया जाता है। आचार्य पार्श्वदेव ने राग-रागिनियों पर विस्तार से लिखा है।

समवशरण में अंदर जाने से पहले जो प्रथम प्रवेशद्वार होता था वहां नाट्यशाला होती थी। वहां पर नाटक होता रहता था। महिलाएं अपने बच्चों को वहां छोड़कर अंदर चली जाती थी। वे बच्चें वहां पर नाटक देखकर, संगीत सुनकर मग्न होते थे।

यह पृथ्वी भी एक नाटकशाला है और ८४ लाख योनि के जीव यहां अपना पाठ (पात्र) निभाते हैं। 'कर्म' इनका डायरेक्टर (निर्देशक) है और प्रेक्षक के रूप में भगवान ज्ञाता द्रष्टा बनकर इन ८४ लाख योनियों के विभिन्न वेषभूषाओं (काला, गोरा, मोटा, पतला आदि) में उनकी विभिन्न भूमिकाओं को (रोना, गाना हंसाना आदि) देख रहे हैं। हर व्यक्ति का जीवन एक नाटकशाला है। क्या-क्या देखा आपने अपने जीवन में? बाल-जीवन कैसे चला गया, बड़े होने के बाद स्कूल-कॉलेज में पढ़ाई में कैसे जीवन बीता, नौकरी-चाकरी, व्यापार-उद्योग में क्या-क्या संघर्ष करने पड़े, कोर्ट-कचहरी, शादी-व्याह आदि में नाना तरह के सांसारिक झमेले, भाई बंधु के झगड़े-झमेले...। इस प्रकार इतना विविधतापूर्ण यह जीवन है कि एक-एक जीव के बारे में एक-एक ग्रंथ लिखा जा सकता है। आप स्वयं अपनी आंखें मूंदकर अंतश्चक्षु से अपने जीवन में झांके तो पायेंगे कि आपका जीवन ही एक नाटक है। कभी बचपन में रोयें होंगे या कभी किसी को रुलाये होंगे। ●

(समृद्ध सुखी परिवार से साभार।)

आपके विचार

"समाज विकास" अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र है जो गत ६१ वर्षों से कोलकाता से प्रकाशित किया जा रहा हैं।

सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य हैं समाज सुधार, समरसता एवं राष्ट्रीय एकता। समाज के साहित्यिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु विभिन्न पहलुओ पर "समाज विकास" के माध्यम से चर्चा आयोजित की जाती है।

समाज सुधार एवं समरसता के अन्तर्गत देहज-दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्ची, विधवा विवाह, बढ़ते तलाक, टूटते परिवार, गिरते सामाजिक एवं नैतिक मूल्य, अर्न्तजातीय विवाह, वृद्धाश्रम क्यों, आदि विषयों पर विचार-विवेचना "समाज सुधार" के माध्यम से करने का प्रयास किया जाता है।

आपके विचारों को प्रकाशित कर हमें हार्दिक प्रसन्नता होगी।

सीताराम शर्मा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
एवं सम्पादक, समाज विकास

प्रान्तीय समाचार

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन : कार्यकारिणी गठित

राष्ट्रीय महामंत्री संतोष सराफ पदेन सदस्य नियुक्त

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन, गुवाहाटी की कार्यकारिणी समिति में नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री ओंकरमल अग्रवाल ने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ को पदेन सदस्य के रूप में नियुक्त किया है।

कार्यकारिणी समिति की प्रथम बैठक रविवार, २५ मार्च २०१२ को गुवाहाटी के होटल प्राग कॉंटिनेन्टल में सम्पन्न हुई जिसमें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ एवं संयुक्त मंत्री श्री कैलाशपति तोदी भी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर सभापति द्वारा स्वागत भाषण के उपरांत नयी कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण व अभिनन्दन हुआ। शाख-संस्था के अब तक के आय-व्यय एवं भावी कार्यक्रमों पर भी चर्चा हुई जिसकी विस्तृत रपट आगामी अंक में दी जाएगी।

नए पदाधिकारी

श्री ओंकरमल अग्रवाल (अध्यक्ष)
श्री शिव भगवान शर्मा (उपाध्यक्ष)
श्री बिजय कुमार जैन (उपाध्यक्ष)
श्री पवन सिकरिया (उपाध्यक्ष)
श्री शिव कुमार अग्रवाल (उपाध्यक्ष)
श्री मधुसुदन सिकरिया (महामंत्री)
श्री के आर चौधरी (संगठन मंत्री)
श्री राज कुमार तिवारी (संयुक्त मंत्री)
श्री अशोक अग्रवाल (सहायक मंत्री)
श्री महावीर प्रसाद भीमसारिया (कोषाध्यक्ष)
श्री राधेश्याम अग्रवाल (जन-सम्पर्क अधिकारी)

सम्मेलन द्वारा विवाह समारोहों में सादगी बरतने की अपील

आपके सुपुत्र/सुपुत्री के मांगलिक विवाह के अवसर पर कृपया हमारी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। कृपया वर-वधू को सुखी एवं दीर्घ वैवाहिक जीवन की हमारी शुभकामनाएं प्रेषित करने की कृपा करें।

हमारे पूर्वजों ने ९६ वर्ष पूर्व समाज के सर्वांगीण विकास एवं समाज सुधार के उद्देश्यों को लेकर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना की। सम्मेलन दहेज, दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्ची, पर्दा प्रथा आदि रुढ़ियों एवं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध सचेष्ट रहा है।

वैवाहिक समारोहों में बढ़ता आडम्बर, दिखावा एवं फिजूलखर्ची, महंगे वैवाहिक निमंत्रण पत्र एवं शुभ विवाह जैसे मांगलिक अवसर पर कॉकटेल पार्टी (मद्यपान) का आयोजन आदि समाज के लिये गंभीर चिंता का विषय है। इन बढ़ती कुरीतियों पर अंकुश लगाना आवश्यक है। इतर समाज में हमारी छवि खराब हो रही है।

यह आवश्यक है कि हम इन विषयों पर गंभीर चिंतन कर इन प्रवृतियों से परहेज बरतते हुए समाज की स्वस्थ छवि प्रस्तुत करने में सहयोग प्रदान करें।

आपका सहयोग एवं समर्थन समाज सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होगा।

आदर सहित —

आपका

हरि प्रसाद कानोड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

जुगल किशोर सराफ
चेयरमैन
समाज सुधार समिति

संतोष सराफ
राष्ट्रीय महासचिव

प्रान्तीय समाचार

छत्तीसगढ़

प्रांतों में शाखा विस्तार के तहत बस्तर क्षेत्र में शाखाओं का गठन आरंभ

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. अरूण हरीतवाल ने बताया कि विगत दिनों राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री संतोष अग्रवाल के साथ हम रायपुर में ४६० किमी दूर बस्तर क्षेत्र के बीजापुर व जगदलपुर के दौरे पर गये। स्वास्थ्यगत कारणों से प्रदेश अध्यक्ष श्री रामानंद अग्रवाल दौर पर नही जा सके किन्तु उनके निर्देशन में सर्वप्रथम बीजापुर में समाजसेवी श्री पन्नालाल लूकड के निवास स्थान पर सभी समाज बंधुओं की बैठक ली, जिसमें मारवाड़ी सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए संगठन की आवश्यकता पर जोर दिया। बैठक में उपस्थित सभी समाज बंधुओ ने आपसी चर्चा के पश्चात् निर्णय लेते हुए स्थानीय बीजापुर शाखा का गठन किया जिसके श्री पन्नालाल लूकड को अध्यक्ष एवं श्री राजेन्द्र कुमार गांधी को सचिव सर्व सम्मति से चुना गया। इसके बाद सायं ६ बजे बीजापुर से रवाना होकर जगदलपुर में रात्रि १० बजे माहेश्वरी भवन में राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री श्याम सोमानी के साथ सभी समाज बंधुओं की बैठक ली। इस बैठक में जगदलपुर विधायक श्री संतोष बाफना भी विशेष रूप से उपस्थित थे। यहां पर भी सामाजिक चिंतन के बाद सर्वसम्मति से श्री पुखराज बोथरा को अध्यक्ष एवं श्री विजय हेलीवाल को सचिव बनाया गया। बैठक में विधायक श्री बाफना ने भी मारवाड़ी समाज की एकता पर जोर देते हुए कहा कि संगठन के माध्यम से ही हम सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज एवं राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकते है एवं अपने आत्मसम्मान की रक्षा कर सकते हैं। इस पूरे दौरे में श्री रामअवतार अग्रवाल, श्री श्याम सोमानी, प्रदीप लूकड का विशेष योगदान रहा। साथ ही बाफना जी ने भी सम्मेलन के कार्यों में हर संभव योगदान देने का वचन दिया। प्रांतीय विस्तार के तहत बहुत जल्द ही बस्तर क्षेत्र में गीदम, सुकमा, दंतेवाड़ा, लेतींगपाल, कांकेर, कोडागांव, बचेली व धमतरी में भी मारवाड़ी सम्मेलन की शाखा गठन की प्रक्रिया आरंभ कर दी गई है।

२२ अप्रैल को शपथ ग्रहण

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की २०११-२०१३ की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह २२ अप्रेल २०१२, रविवार को होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर संस्था के इतिहास व गतिविधियां, उद्देश्य के विषय में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। तदोपरांत शाम ५ बजे, २०११-२०१३ की कार्यकारिणी शपथ ग्रहण का प्रमुख कार्यक्रम रखा गया है। यह सूचना प्रादेशिक सम्मेलन के महामंत्री घनश्याम पोद्दार ने दी।

खाली

रेल सूँ सफर करकै आयो जगदीश आपरै दोस्त नै बोल्यो – यार रेल में ऊपर री सीट मिली सो नींद ही कोनी आई?

दोस्त – नीचै हालै सूं बदल ली होती।

की सूं बदलतो नीचै हाली सीट तो खाली थी।

रोमिंग

दो सदस्य आपस में बतला रैया था।

पैलो – म्हारो घर इतणो बड़ो है कै ऊण में लोकल ट्रेन चालै है।

दूसरो – है म्हारो घर इतणो बड़ो है कै अेक कूणै सूं दूसरै कूणै में जाणै में रोमिंग चार्जेज लागै है।

प्रान्तीय समाचार

छत्तीसगढ़

६१ विकलांग जोड़ों का सामूहिक विवाह

१९.०२.२०१२ को अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर छत्तीसगढ़ मारवाड़ी सम्मेलन ने ६१ जोड़ों का (विकलांग युवक-युवती) सामूहिक विवाह आशीर्वाद भवन, बैरन बाजार, रायपुर में संपन्न करवाया है। इसी दिन सभी जाड़ों का पंजीयन किया गया। शाम चार बजे मेहंदी रस्म व रात में गीत संगीत का प्रोग्राम रखा गया। १९.०२.२०१२ को सुबह ७ बजे सभी जोड़ों का श्रृंगार किया गया व सभी को पहचान कार्ड दिये गये। तत्पश्चात् १० बजे से १ बजे तक फेरो का कार्यक्रम आर्यसमाज के आचार्य श्री दयासागर व २० ब्रह्मचार्यों द्वारा सम्पन्न कराया गया। जिसमें मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ राज्य के कृषि, पशु मत्स्य मंत्री श्री चंद्रशेखर साहू, विशिष्ट अतिथि पूर्व सांसद श्री वासव राज पाटिल, अग्रवाल सभा रायपुर के अध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल, वाईस ऑफ इंडिया-२ फेम जाकिर हुसैन थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. डी.पी. अग्रवाल, राष्ट्रीय महामंत्री अखिल भारतीय विश्व चेतना परिषद ने की। श्री रामानंद अग्रवाल, प्रांत अध्यक्ष छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, सह सचिव सत्येन्द्र अग्रवाल, अध्यक्ष मारवाड़ी युवा मंच व कार्यकारणी सदस्य छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन सुभाष अग्रवाल, कार्यकारिणी सदस्य संतोष तिवारी मंच पर उपस्थित थे। संचालन सम्मेलन के प्रदेश महामंत्री घनश्याम पोद्दार ने किया।

आशीर्वाद समारोह के बाद सभी जोड़ों की शोभायात्रा (शहर भ्रमण) गाजा बाजा के साथ निकाली गई व रात्रि भोजन के बाद सभी जोड़ो को उपहार सामग्री के साथ विदा किया गया।●

समाज विकास में वर-वधू परिचय

आपकी पत्रिका 'समाज विकास' ने एक नये 'वर-वधू परिचय' स्तम्भ के अन्तर्गत वैवाहिक सम्बंधों हेतु संक्षिप्त वर-वधू परिचय का निःशुल्क प्रकाशन आरम्भ किया है।

इच्छुक अभिभावकों से अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्री का नाम, शिक्षा, उम्र, जाति, गौत्र, कद, रंग आदि विवरण सम्पादक, समाज विकास, १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७०००००७, फोन व फैक्स ०३३-२२६८ ०३१९ के नाम आमंत्रित है।

राजस्थानी कहाणी

आंपा नै मालूम नीं जमानो कित्तो बदलगो

– नथमल केडिया (साहित्य-महोपाध्याय)

परतापपुर रै सेठ दीपचन्द जी रो बड़ो डावड़ो जब लिखभण कर हुसियार होगो और उमर भी कामावणै धमावणै हाली होगी तो आपरै बापू नै बोल्यो कै म्हूं तो व्योपार विणज सै 'र मांय ही करूंला। आप म्हूनै इतरी कम दिलाद्यो।

सेठ पैला तो उनणै समझवणै री चेष्टा करी कै देख-आज यो परतापपुर गाम थोड़ो ही रयो है तेरी ये राक्षसी दुकानां (मॉल) आलीसान सिनेमा, थेटर, क्लब सभी तो अठै खुलगा है और व्योपार ही भी आछी मण्डी हो 'री है शेयर बाजार तथा फाटकै बाबत तो आजकल सै 'र जाणै री जरूरत ही कोनी सरकार सै चीजां रो वायदो बाजार खोलकर फाटको चालू कर दियो है। और भी आपरो जिसो चालु व्योपार है इमें ही बढाणै री भोत गुंजाइस है सो भाया। अठै ही रहकर व्योपार बढ़ा। पर जद वो नी मान्यो तो जाणैं री हामी भरली। वो जी दिन जावै हो सेठ जी उणनै सिखावन देवता बोल्या-बेटा! जद म्हैं व्यौपार चालु कर्‌यो हो तो म्हानै तेरा दादाजी एक बात बातायी– एक बाणियो तीरथ करणैं गयो हो एक जगै वो भोजन बणाणै सारू रूकगो। ऊं कै पास कुछ चावल रा दाणा ही हा। वो चुल्हो सुनगायो व चावला नै सिजानै उणानै पानी माय सूं निकाळर्‌यो ही हो कै एक और जणों आयो-वो बोल्यो-सेठ जी मेरे कनै कुछ दाल का का दाणा है आप उणानैं चावलां माय मिलाल्यो तो दोनूं रै सीर माय खिचड़ी बण जावैली जिकी खाकर आपा दोनूं जणा रंजागा। बाणियो ऊंकी दाल भी चावला मायं मिलाली और जद खिचड़ी बणगी तो बाणियो पैली आपरै सीरवाल नै बोल्यो-आप पैली खाल्यो और उणने खिचड़ी परोस दी पर उणरो पेट भर्‌यो कोनी और वो और खिचड़ी मांगणै लाक्यो तब बाणियो बोल्यो-आपर जिती दाल ही उण सैं ज्यादा आप नैं परोस दी अब आप और खिचड़ीं कइंया मांगो हो?

पर आदमी अड़गो कै आप देखो अभी तो मेरी दाल आपरी खिचड़ी मांय है – विचारो बाणियो देख्यो-परदेस रो मामलो है इब इं सै कुण झंझट करैलो सो उणनै और खिचड़ी परोस दी।

कैणै रो मतलव यो है कै बाणियो आधो परदो भूखो हो रयो। भाया – तेरे दादाजी री या सिखावन म्हूं तो गांठ मांय बांध ली और आखां जिणगानी मांय कीर्र भी सीर साझे मांय काम कोनी कर्‌यो। सो देख ले– आज सोरो सुखी हूं। सारी जिणगानी इज्जत रै साथ बितायी। घर मांय खाणै पीणै री भी कदै कमी नी हुयी। आयेड़ो कावो भी भगवान री दया सूं घर रै स्वरूपलायक निकाल दियो। गांव मांय एक तरै सूं पंचा स्यारकी इज्जत है।

पर ई घर मांय सेठ जी री सीख सुणनै हाळा कुंवर साब तो सैर मांय रयेड़ा हा अर अंग्रेजी मिडियम री स्कूल मांय ऊंची क्लासां री पढ़ाई करेड़ा हा। दो चार कानूनी दांवपेच वाला दोस्ता री भी संगत ही। वे दादोजी री सीख सुणकर पापा सूं बोल्या-पापा जठै तांयी म्हूं समझयो – दादाजी आपनै या बताणों चावै हां कै बेटा! सीरवाल मिलै तो सीर रो काम जरूर करिये पर हरदम ध्यान राखियो बनिये दाल हाळा सीरवाल। देख चावल हालो सीरवाल-चावल दाल धाणैं सूं लेयकर-खिचड़ी सिजणै तक चूल्है रै आगे तप्यो पीछू उणनै पैली खाणों परोस्यो। हिस्सै सूं ज्यादा परासणों पड़यो। ऊं कै बाद में भी ऊं को क्लेश रयो। सांच्याणी इयां को सीरवाल राम दे तो ही मिलै। और वो पापा रै धोक देकर सै 'र सारू रवाना होगो। सेठ जी ऊं कै कानी देखता ही रैगा।

लघु कथा

एक साँवली-सुन्दर लड़की

उसने लपककर ट्रेन पकड़ी और अनायास ही किताबों का बोझ मुझे थमा दिया। 'क्या आप इतनी किताबें लेकर कॉलेज जाती है?' संक्षिप्त सा उत्तर मिला – 'जी नहीं, लाइब्रेरी से ली है।'

– अच्छा पढ़ने का इतना शौक है?

– हाँ!

बातचीत के दरम्यान उसने बताया कि वह रोज ट्रेन पकड़कर इस शहर में आती है। सरकारी दफ्तर में तीन बजे तक काम करने के बाद एक घंटे भारतीय नृत्य की रिहर्सल, फिर एकाध घंटे पुस्तकालय और अन्त में पन्द्रह मिनट दूरदर्शन पर अंग्रेजी समाचार पढ़कर वापस ट्रेन से लौट जाती है।

– यानि, आप इतना काम एक साथ कर लेती है?

'बात यह है भाई साहब, जितनी भी औरते होती है न, हमेशा एक दूसरे की शिकायत करती रहती है। किंतु मेरे पास किसी के लिए कोई भी शिकायत नहीं है। मैं सारा काम बड़ी आसानी से कर लेती हूं। ... कभी-कभार कविताएँ भी लिख लेती हूं।'

– अच्छा। तब तो आप चित्रकारी भी करती होंगी!

'जी, कभी-कभी कार्टून बनाती हूं'– मुस्कुराते हुए बोली, वह।

– इतनी रात घर लौटते, वह भी ट्रेन से, डर नहीं लगता आपको, फिर अभी तो उम्र भी कोई सत्रह-अट्ठारह की ही होगी।

'डर कैसा? जो होना है, होगा ही' – निःसंकोच बोली, वह।

स्टेशन आ गया और किताबें ले धन्यवाद के साथ वह उतर गयी। मै देर तक उसके विचारों की स्वतंत्रता टटोलता रहा और रह-रह कर उसका साँवला सुन्दर चेहरा मेरी आँखों में स्थिर होने लगा।

डायनामाइट

एक के बाद दूसरा वर्ष भी बीत गया पर बेटे की आंखों में कैद टीवी पर दिखाया गया अमेरिकन सेंटर प्रकरण शायद ज्यों का त्यों मौजूद था।

अचानक एक दिन चित्रों की पुस्तक पलटते बेटे ने जिज्ञासा प्रकट करते हुए पूछा– 'पापा, क्या ऐसी कोई चीज है जिससे इस पहाड़ को उड़ाया जा सके?' मैंने व्यस्तता के कारण संक्षिप्त-सा उत्तर देते हुए कहा–'हां, डायनामाइट! इससे बड़े-बड़े पहाड़ को भी उड़ाया जा सकता है।' परंतु बेटा इतने से ही संतुष्ट नहीं हुआ और पुनः पूछ बैठा – 'यह डायनामाइट मिलता कहां है, पापा?' अब इसका क्या उत्तर दें, यह तो मुझे भी नहीं पता था। कुछ देर इसी उधेड़बुन में खोया रहा। फिर भी बात को टालने के लिए मैंने कह दिया – 'मोदीखाने में'।

बात आयी-गयी हो गयी। फिर एक दिन मासिक बिल का भुगतान करने जब मोदीखाने पहुंचा तो लौटते समय मोदी ने टोकते हुए बताया कि आपका बेटा डायनामाइट खरीदते आया था। मैंने कह दिया कि यहां नहीं मिलता तो पूछने लगा कि कहां मिल सकता है।

मैं घर लौट आया। बेटे को बुलाया। काफी घूमा-फिरा कर पूछने और प्रलोभनों का वास्ता देने पर अंततः उसने बताया कि पड़ोस के मकान में रहने वाले एक दूसरे बच्चे के साथ कई दिनों से झगड़ा चल रहा है जो ताकत में उससे कहीं ज्यादा बलवान है। अतः बच्चे ने निर्णय लिया कि कहीं से डायनामाइट लाकर उसे मकान सहित उड़ा दिया जाए। मैं सर पकड़ कर रह गया।

– शिव सारदा

कच्ची/पक्की

जीमणंवार री टेम लड़की हाला अेक बुजुर्ग नै पूछी – 'थे रसोई कच्ची ल्योगा कै पक्की?'
बुजुर्ग बोल्यो – 'थे कैवोगा तो कच्ची ले ल्यांगा, पण बात पक्की है नै?'

व्यंग्य

कुर्सी के लिए कुश्ती

– **रामचरण यादव**, बैतूल (म.प्र.)

आदिकाल से हर आदमी का अपना-अपना शौक रहा है। किसी को कुछ कहने का, किसी को चुप रहने का। किसी को किस्सा कहानी का, किसी को हुक्का पानी का। किसी को गाने-बजाने का तो किसी को चीजे चुराने का। अभी तक आम आदमी की आदत से आपको भलीभांती अवगत नहीं कराया फिर भी आपको इतना तो अवश्य ज्ञात होगा कि अदना सा आदमी समय आने पर बहुत कुछ कर सकता है। महाभारत काल में जन्में महान योद्धा कर्ण की तरह कलियुग में अवतरित राजनीति के महारथी भाई कुंजीलाल ने तो कमाल ही कर दिया। कुर्सी के लिए अपनी प्राचीन कुश्ती कला को दांव पर लगा दिया और उन्हीं दांव पेंच के सहारे आज सभा संसद को अखाड़ें का रूप प्रदान करने में सफलता अर्जित की है। राजनीति मानों युद्ध का मैदान और इसमें कूदने वाले कुरक्षेत्र के कुशल योद्धा कौरवों की भांति किसी तरह राजसत्ता का सुख भोगने को आतुर है। नीति न्याय, धर्म-कर्म, प्रेम, प्यार, त्याग तपस्या अथवा विकास के विषय में सोचने की फुर्सत किसे? सभी तो अपनी खुशी अथवा केवल कुर्सी के लिए ही सोचते है। कुर्सी के खातिर कुछ भी करने को तैयार है। कुछ दिन पहले हमने भी कुर्सी पाने का प्रयास किया किन्तु काफी कोशिश करने के बाद भी किस्मत ने साथ नहीं दिया तो किनारा कर लिया। भाई कुंजीलाल के कहने पर दूसरी बार फिर साहस करके कुर्सी हथियानी चाही लेकिन असफलता ही हाथ लगी। कुश्ती में माहिर कुंजीलाल तो बचपन से ही जीत का सेहरा अपने सिर पर बांधते रहे है। कुश्ती के दांव इन्होंने अपने गांव में सीखे थे आजकल शहरों में सिखा रहे है। कभी-कभी छोटे दांव पेच भी बड़े-बड़े मैच की फिक्सिंग में काम आ जाते है। राजनीति में तो कई लोग इन्हीं दांव पेंच का इस्तेमाल कर कुर्सी प्राप्त करते है। कुंजीलाल को जरा भी पता नहीं था कि कुश्ती लड़ने के इतने घातक परिणाम मिलेंगे। कुश्ती लड़ते-लड़ते कभी चुनाव भी लड़ेंगे। कुर्सी के पहले अथवा कुर्सी के बाद केवल लड़ना और झगड़ना ही जिन्दगी का ध्येय बन जाता है। खेद है कि कुर्सी पाने के बाद आदमी, इन्सान और भगवान में भेद नहीं रखता बल्कि खुद को ही खुदा समझने लगता है। जब मौत का सामना होता है तब उसे अहसास होता है कि मैं सब कुछ हो सकता हूँ पर भगवान नहीं। मामूली सा इन्सान कभी-कभी कुर्सी के कारण अपने आपको महाबली रावण समझने की भूल कर बैठता है। नाभि के भीतर अमृत के भ्रम में राम से बैर करता, आखिर बेमौत मारा जाता है। हमने तो क्या हमारे बाप दादा ने कभी कुश्ती नहीं लड़ी किन्तु कुंजीलाल ने तो कुदरत के इस खेल को इस तरह खेला कि अकेला ही दस पर भारी पड़ने लगा।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक इसकी कला की प्रशंसा हो रही है। पाण्डिचेरी से चेरापूंजी तक कुंजीलाल की इतनी अधिक पूंजी जमा हो चुकी है कि सात पीढ़ी आराम से पल सकती है। कुंजीलाल को कभी अपने मकान में ताला कुंजी की आवश्यकता नहीं पड़ी। बेहिसाब दौलत के मालिक, इकलौते वारिस भाई कुंजीलाल की कहानी बड़ी दिलचस्प है। छोटे से कस्बे में केवल एक खोली किराये पर लेकर रहने वाला कल का छोकरा कुंजी आज का पूंजीपति राजनेता के.एल. सहगल कहलाएगा, विश्वास ही नहीं होता। कुन्ती के पांच पुत्र पाण्डव कहलाए पर ये द्वापर युग की बातें है किन्तु इस घोर कलियुग में कल का लावारिस, गरीब, अनाथ, अबोध बालक आज संसार का सबसे अमीर आदमी कहलाएगा यकीन नहीं होता। इसे कुदरत का करिश्मा कहे या कुर्सी का कमाल। इस विषय पर गंभीरता से विचार करे तो कुर्सी के पहले कुश्ती पर ध्यान जाता है। सदियों से राजा महाराजा अपने राज दरबार में पहलवानों को पाला करते थे। गाय-भैस की भांति उनको भी घास डाला करते थे। वे पले हुए पहलवान भले ही आज तक किसी का भला नहीं कर सकें पर अपनी कुश्ती कला का प्रदर्शन कर लोगों का मनोरंजन जरूर करते रहे है। कंस ने भी दो मल्ल योद्धाओं को माल खिलाकर कृष्ण-बलराम के हाथों खूब पिटवाया था। कुश्ती में अपने करतब दिखाने का बहुत कम समय मिलता है जबकि कुर्सी की आड़ में आप जिंदगी भर सैकड़ों जिंदगी के साथ खिलवाड़ कर सकते है। कुश्ती हमेशा बराबर वालों के

बीच होती है जबकि कुर्सी की लडाई में जाति, धर्म, उम्र, भाषा, ऊँच, नीच, नर, नारी आदि किसी का कोई बंधन नहीं। मां के विरुद्ध बेटा, पिता के विरुद्ध ससुर, चाचा के विरुद्ध भतीजा, सास के विरुद्ध बहू आसानी से चुनाव लड़ सकती है। जब घर में सास बहू लड़ सकती है तो खुलेआम सड़क पर चुनाव क्यों नहीं लड़ सकती। कुश्ती में जब एक पहलवान अखाडे में उतरता है तो उससे भिड़ने के वास्ते भी सिर्फ एक ही पहलवान आएगा मगर एक कुर्सी के लिए सैकड़ों लोग एक साथ मैदान में कूद पड़ते है। कुर्सी दौड़ में हर व्यक्ति शामिल हो सकता है किन्तु कुश्ती हर व्यक्ति नहीं लड़ सकता क्योंकि इसमें सीधे हाथ पैर टूटने की पूरी संभावनाएं रहती है।

कुश्ती में कोई साथ नहीं देता पर कुर्सी के पीछे हजारों आपके साथ होंगे। कुश्ती और कुर्सी के बीच काफी अन्तर होने के बावजूद भी कुछ विशेषताएं समान है। कुरूक्षेत्र में कुश्ती तो हरक्षेत्र में कुर्सी सबसे महान है। कुश्ती में सिर्फ सामने वाले को पछाड़ना होता तो कुर्सी में पूरी पार्टी को परास्त करना जरूरी हो जाता वरना दोनों की जगह हार को स्वीकार करना पड़ेगा। कुंजीलाल ने कभी कोई गलती नहीं की इसीलिए आज तक जीत रहा है। कुर्सी और कुश्ती कमजोर, कंजूस, कामचोर लोगों की तकदीर में नहीं। साहित्यकार, कलाकार अथवा कवि कहलाने वाले कभी कुश्ती लड़ नहीं सकते और कुर्सी के पीछे पड़ नहीं सकते क्योंकि इन्हें सिर्फ जीने का अधिकार प्राप्त है लड़ने का नहीं। कुर्सी के करीब आने पर मुझे तो बड़े अजीब सपने दिखते है, जो अपने है वे भी गैर नजर आते है। कुर्सी के पास पहुंचने पर भले बुरे की पहचान अपने आप समाप्त हो जाती है। यदि इस पर बैठ जाए तो न जाने क्या होगा। कैकयी के कोप की भांति अनेकों लोगों का क्रोध आप पर कहर बनकर टूटेगा। कुर्सी के मोह से मुक्त रहने में ही भलाई है। भले लोग मेरी बात मान भी ले तो क्या फायदा। बुरे लोग कभी नहीं चाहेंगे कि उनका बुरा हो। वे तो हमेशा औरों का बुरा सोचते है। आप सदा मेरे बारे में सोचो और अपने आंसू पोछो क्योंक अब मेरी बारी है, कुर्सी तो भैया सबको प्यारी है।●

गीत-ग़ज़ल

हाथ में पत्थर नहीं

हाथ में पत्थर नहीं, इक फूल बस रख लीजिये।
ख़ार का क्या काम है, बस प्यार इक भर लीजिये।।

रार की फसलें उगा, जहर क्यों तक्सीम करते।
अलसुबह सोंधी हवा, सौगात ये धर लीजिये।।

साँप जंगल छोड़ कर, हैं सुशोभित कुर्सियों पर।
रहनुमा बन डस रहे, उपचार कुछ कर लीजिये।।

पेड़ ही वे कट रहे, जिन छाँव में हम बैठते।
जल रहा है तन बदन, इक आशियाँ कर लीजिये।।

ये हकीकत शै अजब, लग गये हैं सब सुनाने।
'श्याम' तो कहता रहा, अब आप भी कह लीजिये।।

ईश का ही अंश है वह

ईश का ही अंश है वह, पर गुनाहों से भरा।
पुण्य ऋजुता से परे हैं, छल कपट से वह भरा।।

किस तरह के उपकरण से, है विधाता गढ़ रहा।
शून्य मेधा वह बना है, नाश अपना कर रहा।।

कर रहा है वह प्रदूषित, माँ धरा के साज़ को।
देखता है पातकी वह, लुट रहे सिरताज़ को।।

खोदता उसके ख़जाने, स्वप्न उसका तोड़ता।
लूटता उसकी धरोहर, चैन उसका कोसता।।

हनन करता अमन का वह, लिप्त होकर स्वार्थ में।
कर रहा कौशल नियोजित, ध्वंस के व्यापार में।।

– श्यामसुन्दर बगड़िया

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

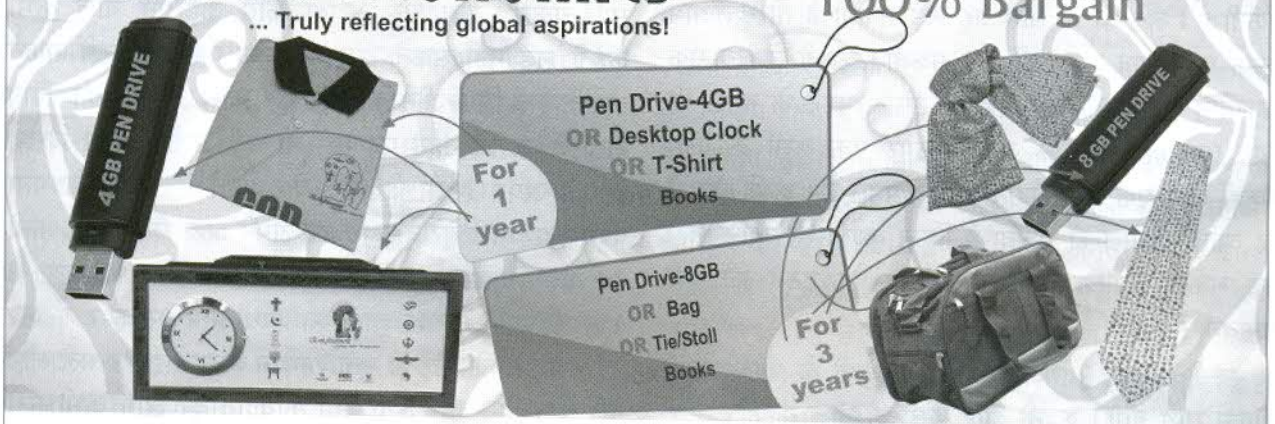

Subscribe Business Economics :

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1440/-	1440/-	1440/-	216	144	☐ 8GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Tie/Stoll OR ☐ Books
☐	1 Year	24	480/-	480/-	480/-	72	48	☐ 4GB Pen Drive OR ☐ Desktop Clock OR ☐ T-Shirt OR ☐ Books
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ Exclusively for Students/Institutions
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

For 1 year Book of choice upto ₹ 480 | **For 3 years Books of choice upto ₹ 1440**

Business Economics Subscription Form

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City/District: _____

State: _____ Country: _____ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated: _____ for Rs. _____ drawn on: _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: _____ date: _____

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai :** Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 05889

Lucky DRAW

QUARTERLY LUCKY DRAW FOR THE SUBSCRIBERS :
1st Prize : INR 2000/- ● 2nd Prize : INR 1000/- ● 3rd Prize : INR 500/-

कविता

दूर के राही

– राम गोपाल सैनी

हम हैं भाई दूर के राही। एक दिन सबको जाना हैं।।
नहीं रहेगा हरदम कोई। किसका यहां ठिकाना हैं।।

कुछ दिन की हैं रहन हमारी। कुछ दिन का ये मेला हैं।।
बिछड़ेंगे सब बारी-बारी जाता हंस अकेला हैं।।

क्या हैं भरोसा इस राही का। कब तक ठहरे गांव में।।
उड़ जायेगा प्यारा पंछी। दूर गगन की छांव में।।

सुंदर-सुंदर महल अटारी। छोड़ जाए जग सारा।।
कंचन जैसी काया छोड़े। बिलखे हैं परिवारा।।

कर्म तुम्हारे साथ रहेंगे। और न जाये साथ में।।
वहीं रहेंगें संगी साथी। कुछ ना तेरे हाथ में।।

लोभ मोह में जीवन बीता। झूठ का लिया सहारा।।
चौरासी के फेर में पड़ के। भटके जीव तुम्हारा।।

चेत सके तो चेत रे बंदे। अंत समय पछताएगा।।
भव सागर की लहरों में तू। कई-कई गोते खायेगा।।

कौन वहां पे तेरा अपना। किसके घर पर जायेगा।।
मौका मिला हैं नैकी कर ले। वही तो आगे पाएगा।।

ऐसी कर ले करम कमाई। चोर न चोरे रात में।।
मारे काटे साथ न छोड़े। छाया ज्यों रहे साथ में।।

बड़ी अनोखी ईश्वर रचना। जीव बड़ा भरमाता हैं।।
प्रेम का मारग बड़ा सरल हैं। अमर लोक पहुंचाता हैं।।

बड़े भाग से नर तन पाया। बलिहारी भगवान की।।
सेवा कर ले दीन-हीन की। ओढ़ चदरिवा ज्ञान की।।

हम हैं भाई दूर के राही। एक दिना सबको जाना हैं।।
नहीं रहेगा रहदम कोई। किसका वहां ठिकाना हैं।।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

वैवाहिक आचार संहिता

- मिलनी सबकी ४ रुपया।
- अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।
- विवाह मे दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।
- कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपाएं।
- नेग का कार्यक्रम एक ही हो।
- सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष भी वहन करें।
- बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराब आदि का उपयोग वर्जित हो।
- रात्रि के विवाह की वनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।

सम्मेलन धार्मिक व अन्य सामाजिक समारोहों में भी सादगी बरतने की अपील करता है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

समाज विकास

पढ़ें और पढ़ायें

पूरे भारतवर्ष में प्रसारित समाज विकास में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

विज्ञापन दरें

TARIFF

Cover Page / Colour	Rs. 50,000.00
Inside Covers / Colour	Rs. 25,000.00
Special Full Page / Colour	Rs. 15,000.00
Full Page	Rs. 10,000.00
Half Page	Rs. 5000.00

MECHANICAL DATA

Overall Page Area	27 x 19 cm
Print Area	22x16 cm
No. of Coloum	Two

All Cheques to **"All India Marwari Federation"**

सम्पर्क करें -

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

१५२ बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता - ७०० ००७

फोन एवं फैक्स ०३३-२२६८-०३१९

ईमेल - aimf1935@gmail.com

पुस्तक समीक्षा

सहज राजस्थानी व्याकरण

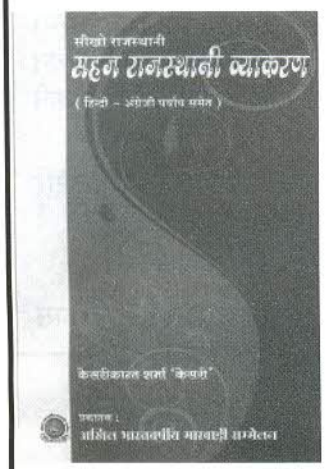

लेखक

हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं राजस्थानी भाषा साहित्य के प्रचारक कवि केसरी कान्त शर्मा 'केसरी' द्वारा रचित 'सहज राजस्थानी व्याकरण' का संशोधित अंक निःसंदेह प्रवासी राजस्थानियों के लिए भाषा-व्याकरण सीखने का एक उत्तम माध्यम है। इसमें केसरी जी ने अपने विद्या कौशल का तो परिचय दिया ही है, अपनी अप्रतिम प्रतिभा से राजस्थानी भाषा साहित्य को भी समृद्ध किया है। देश-विदेश में रहनेवाले करोड़ों राजस्थानियों को भाषा के अनुशाषण एवं संस्कार से अवगत कराने में केसरी कृत 'सहज राजस्थानी व्याकरण' एक सेतु का काम करेगी। पुस्तक के प्रथम संस्करण के संबंध में वरिष्ठ कवि डॉ. उदयवीर शर्मा लिखते है कि, "सीखो राजस्थानी का उपयोगी उद्देश्य लेकर रचित पुस्तक 'सहज राजस्थानी व्याकरण' अपने ढंग की अनोखी अद्वितीय और अनमोल पुस्तक है। इसे व्यावहारिक व्याकरण की दृष्टि से देखना चाहिए। इसमें व्याकरण के सभी अंगों का क्रियात्मक स्वरूप प्रकट हुआ है।"

नाम	:	**सहज राजस्थानी व्याकरण**
लेखक	:	**केसरीकान्त शर्मा केसरी**
प्रकाशक	:	अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, कोलकाता
पृष्ठ	:	८०, मूल्य: १०० रुपया मात्र
द्वितीय संस्करण	:	जनवरी २०१२

शब्द एवं वाक्य विन्यास तथा उच्चारण के तौर-तरीकों की बारीकियों के निरुपण के साथ ही राजस्थानी शब्दों के मानकीकरण के लिए भी यह पुस्तक महत्वपूर्ण है। प्रबुद्ध लेखक ने पुस्तक में बड़े ही सरलीकरण के साथ व्याकरण के अंगों-उपांगो को विस्तार दिया है। हालांकि राजस्थानी भाषा को अभी तक संवैधानिक महत्व नहीं मिला है लेकिन निकट भविष्य में यदि इसे संवैधानिक महत्व मिलता है तो इस पुस्तक का महत्व और बढ़ जाएगा, पुस्तक पाठ्यक्रम में शामिल होने योग्य है।

प्रस्तुति : अनंतशिव

मॉडर्न कॉलेज

पति पत्नी सूं बोल्यो – म्है एक कालेज खोलणै री योजना बणाई है। उण कॉलेज रो इसो नाम बता जिणसूं ज्यादा सूं ज्यादा विद्यार्थी कॉलेज में आवै।

पत्नी – सोच कै बोली – थारै कॉलेज रो नाम "मॉडर्न गर्ल्स कॉलेज फॉर बॉयज" राखल्यो।

मारवाड़ी सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य एवं कार्यक्रम

- समाज सुधार, समरसता एवं राष्ट्रीय एकता।
- न्यूनतम वैवाहिक आचार संहिता का प्रचार-प्रसार एवं मान्यता।
- कोलकाता के २५ए अमहर्स्ट स्ट्रीट के १० कट्ठा जमीन पर ५ तल्ला मारवाड़ी सम्मेलन भवन का निर्माण।
- नये प्रांतों में प्रादेशिक सम्मेलनों का गठन।
- कोषाध्यक्ष नहीं अध्यक्ष बनो - राजनैतिक जागरुकता एवं चेतना हेतु सभी प्रांतों एवं राष्ट्रीय स्तर पर मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्ता सम्मेलनों का आयोजन।
- उच्च शिक्षा कोष : समाज के मेधावी एवं जरुरतमंद छात्र-छात्राओं को तकनीकी एवं उच्च शिक्षा के लिए सहयोग।
- उद्यमी प्रशिक्षण कार्यक्रमः समाज के सफल उद्योगपतियों द्वारा युवा उद्यमियों को प्रशिक्षण।
- राष्ट्रीय स्तर पर सदस्यता अभियान।
- सम्मेलन के मासिक मुख्य पत्र समाज विकास का प्रचार-प्रसार।

SMS की दुनिया

देश-दुनिया-समाज के घटनाक्रमों पर बेहतरीन समाज की उपज का जायका आपको घर बैठे SMS पर मिलता है। कुछ को आप तुरन्त Delete करते है तो कुछ को मित्रो को Forward करते है। SMS बन गया है अपने अच्छे-बुरे दिलचस्प विचारों को सीधे आपके पास पहुंचाने का नायाब तरीका।

SMS की दुनिया में हम पाठकों से मजेदार, जायकेदार, तेज-तर्रार SMS समाज विकास को Forward करने के लिये आमंत्रित करते है जिन्हें हम Sender के नाम के साथ प्रकाशित करना चाहेंगे।

– सम्पादक, समाज विकास

(1) There is only one difference between Dream & Aim.
Dream requires soundless sleep to see,
Whereas Aim requires sleepless efforts to achieve.

(2) Wellwisher is not who meet u &
talk 2 u everyday,
Wellwisher is 1 who may or
may not meet u,
But always think of u,
Ur happiness & stays in touch.

(3) आपकी खुशी की चाहत करते है
बस इतना सा गुनाह करते है
आज फिर आपके इंतजार में बैठे है
देखना है, आप कब हमें याद करते है।

(4) आसमाँ से बरसात होती है
जब आपकी याद साथ होती है
जब भी वेटिंग पे हो मेरा मोबाइल
समझ लेना आपकी सलामती के लिए
मेरी खुदा से बात होती है।

(5) Beautiful msg written outside a church...
"Extending one hand to help somebody
has more value....
Than joining two hands for prayer."

(6) Most of d thing we desire r
expensive
but the truth is
that the thing which really
satisfy us r free,
just like luv, joy, laughter & gd
relations.

(7) Not all fingures are of the
same length,
But when they are bent,
All stands equal in length,
Life becomes easy when we
band and
adjust to suitations.

(8) इंडियन पति लोग की ट्रैजेडी–
"बीवी अपनी मर्जी से इन्हें जीने
नहीं देती
और करवाँ चौथ का व्रत रखकर
मरने भी नहीं देती।"
अजब देश की गजब कहानी।

viom
NETWORKS

A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

Independent entity with over 38,000 towers and over 89000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

First Indian Telecom Infrastructure Company to receive ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification

Viom Networks Limited

Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28 March, 2012
RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : aimf1935@gmail.com

SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
JOINT GENERAL SECRETARY, A.I.M.F
16, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHAGHAT, SALKIA
HOWRAH- 711106
WEST BENGAL